SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पूर्वाशा

वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका



अंक
33

वर्ष 2023-2024

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग - 793001



श्री जॉन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



श्री अहमद हसनुज्जमान चौधुरी, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में अधिकारियों, कर्मचारियों एवं बच्चों की सामूहिक छायाचित्र ।



"पूर्वाशा" वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका

अंक - तैंतीस

वर्ष : 2023 - 2024

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय		लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या
.	पूर्वाशा परिवार	.....		(i)
.	राजभाषा प्रतिज्ञा	.....		(ii)
.	हिंदी दिवस 2024 के अवसर पर माननीय गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री जी का संदेश	.....		(iii)-(vi)
.	प्रधान महालेखाकार का संदेश	.....		(vii)
.	समाचार-पत्र कतरन	.....		(viii)
.	सम्पादकीय	.....		(ix)
.	समाचार-पत्र कतरन	.....		(x)
.	आपके पत्र	.....		(xi - xix)
1.	राष्ट्रीय एकता	.....	सुश्री शाहनाज बेगम	1
2.	चलते रहो	.....	श्री राजेश कमल राजपूत	2
3.	डिजिटल युग की दस्तकः कागज से क्लाउड तक	.....	श्री संजीव कुमार गणेश	2
4.	हिंदी दिवस	.....	मुहम्मद जियाऊल हक	3-4
5.	बहुत शानदार बात लिखी	.....	श्री शौर्य मिश्रा	4
6.	सपनों की उड़ानः संघर्ष से सफलता तक	.....	श्री अमित कुमार वर्मन	5
7.	मन जीते जग जीते	.....	श्रीमती रोज बेगम	6-7
8.	तितलियाँ	.....	सुश्री बन्दारिशा पिंगरूप	7
9.	भविष्य में वाहनों के इंधन का स्थानांतरण : हाइड्रोजन ईंधन और इलेक्ट्रिक वाहनों की दिशा	.....	श्री एक्वारियस मैथ्यू	8-10
10.	क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया	.....	श्री विशाल	11
11.	भारत में नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट और इसकी प्रभावकारिता	.....	श्री रीतेश आनंद	12-14



क्रमांक	विषय		लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या
12.	आम आदमी की जिन्दगी : संघर्ष और सुकून की कहानी	.....	श्री सुमित कुमार वर्मन	15
13.	रोशनी अंधे की	.....	श्रीमती मुमताज बेगम	16
14.	प्यारे बच्चे	.....	श्री जॉनीवनडोर मरबनियांग	17
15.	पर्यावरण	.....	श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप	17
16.	अनुशासन की राह	.....	श्री यश नायक	18
17.	शिक्षक	.....	श्री चिराग राजपूत	19
18.	कहानी हसीन होनी चाहिए	.....	सुश्री दिया राजपूत	19
19.	जरा सोच समझकर	.....	श्रीमती रेखा राजपूत	20
20.	मैंने देखा है	.....	श्रीमती केशु रानी	21
21.	भारत में दहेज प्रथा	.....	मुहम्मद अरिफुल हक	22-23
22.	पिता पर खूबसूरत कविता	.....	सुश्री स्निग्धा मिश्रा	24
23.	हिंदी दिवस 2024 : राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक	.....	श्री जितिन कुमार	25-26
24.	पूर्वोत्तर की धरती	.....	श्रीमती संगीता मिंकी	27
25.	हिन्दी पखवाड़ा 2023 : एक संक्षिप्त विवरण		.....	28
26.	कार्यालय से सेवा निवृत्त एवं स्वार्गीय कार्मिकों के विवरण		.....	29

- टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए ।
- मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए ।
- शब्दों के लिए अटकिए नहीं ।
- अशुद्धियों से घबराइए नहीं ।
- अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए ।



पूर्वाशा परिवार

संरक्षक

श्री जॉन के. सेलाटे
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
मेघालय, शिलांग - 793 001

संपादक

श्री एस. सामिदुरै - उप महालेखाकार (प्रशासन)

सदस्य

श्री मैथ्यूस मैथ्यू	-	उप महालेखाकार
श्री अहमद हसनुज्जमान चौधुरी	-	उप महालेखाकार
श्री एक्वारियस मैथ्यू	-	स्थापना अधिकारी
श्री रीतेश आनन्द	-	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
मुहम्मद जियाऊल हक	-	हिंदी अधिकारी
श्री जितिन कुमार	-	कनिष्ठ अनुवादक

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं, रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे ।



सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरन्तर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते है कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरन्तर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे । अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे । हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावन और निरंतर प्रयासरत रहेंगे ।

जय राजभाषा ! जय हिन्द !

हर राष्ट्र के पास अपना चिन्तन होता है, अपनी भावनाएं होती हैं जिसे वह अपनी भाषा में व्यक्त करता है । मैं, यह मानता हूँ कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि उससे बोलने वालों की संस्कृति और संस्कार भी उससे जुड़े होते है । भाषा जहाँ अपनी संस्कृति विरासत से उपजी हुई होती है, वहीं वह इस विरासत को आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाती भी है। इसलिए भाषा का प्रश्न केवल एक अभिव्यक्ति के माध्यम का प्रश्न नहीं है बल्कि, यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और हमारे देश के लोगों के संस्कार से भी जुड़ा है । फिर लोकतंत्रात्मक शासन पध्दति में तो भाषा का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि जनता तभी कामकाज में सक्रिय रुप से भाग ले सकती है, जबकि राजकाज ऐसी भाषा में हो, जिसे वहाँ की जनता अच्छी तरह से समझ सकें ।

– डॉ. शंकर दयाल शर्मा





हिंदी दिवस 2024

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश



राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

(अमित शाह)


हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, 14-15 सितंबर 2024
राजभाषा हीरक जयंती
भारत मंडपम, नई दिल्ली



संदेश

सत्यमेव जयते



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
MEGHALAYA, SHILLONG.

मुझे यह जानकर खुशी हुई कि कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "पूर्वाशा" का **33** वां अंक हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर प्रकाशन हो रहा है । इस अंक में सम्मिलित विविध लेखों का योगदान जो हमारे कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों और उनके परिवारजनों ने दिया है, इस पूरे योगदान को देखकर मैं वास्तव में बहुत प्रसन्न हूँ साथ ही सम्पादकीय मंडल को भी धन्यवाद देता हूँ, जिनके अथक प्रयास से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया हैं ।

हम सभी जानते है कि हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है । अतः सरकारी कार्मिक होने के नाते हमारा यह कर्तव्य बनता है कि हम हिन्दी सीखें और उसे अपने दिन-प्रतिदिन के कार्यालयीन कार्यों में उपयोग करें । मैं आशा करता हूँ कि यह पत्रिका कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच हिन्दी के प्रयोग के प्रति रूचि, बढ़ावा एवं लोकप्रिय बनाने में सक्षम होगा ।

मेरी शुभकामनाओं सहित ।

जॉन के सेलाटे
(जॉन के सेलाटे)






सिलीगुड़ी में क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन आज: डॉ. मिनाक्षा जाला

महिला दिवस पर आयोजित समारोह में पत्रिका 'राजभाषा भारती' के अंक 166 होगा समर्पित

सन्मार्ग संवाददाता

सिलीगुड़ी : देश में हिंदी के विकास के लिए आप जानते हैं कि संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी है और अनुच्छेद 351 में हिंदी भाषा के विकास के लिए आवश्यक निर्देश दिए गए हैं। हम सभी अपने संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन के क्रम में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा 8 मार्च, 2024 को सिलीगुड़ी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

इस समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय गृह राज्य मंत्री निशिथ प्रामाणिक मौजूद रहेंगे। साथ ही सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय सहित केंद्र सरकार और केंद्रीय कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी व कर्मचारी भी उपस्थित रहेंगे। समारोह में मंचासीन अतिथियों के कर-कमलों से केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों एवं उपक्रमों को विभिन्न श्रेणियों के अंतर्गत राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु पुरस्कार प्रदान किए जाएंगे। उक्त बातें गुरुवार को एसबीआई के कॉन्फ्रेंस हाल में पत्रकारों को संबोधित करती हुई गृहमंत्रालय की संयुक्त सचिव राजभाषा डॉ. मिनाक्षी जौली ने कही। इनके साथ सहायक निदेशक निर्मल दुबे, अध्यक्ष नराकास सिलीगुड़ी वीरेंद्र सिंह, उप सचिव राजभाषा अनिल कुमार, निदेशक पीआईबी अब्दुल हमीद, परामर्शदाता, पूर्वोत्तर बदरी यादव मौजूद थे। उन्होंने कहा कि इसके साथ ही राजभाषा विभाग अपनी तिमाही पत्रिका राजभाषा भारती के माध्यम से विगत 46 वर्षों से हिंदी के संवर्धन की दिशा में कार्य कर रहा है। महिला दिवस पर होने वाले इस आयोजन में पत्रिका 'राजभाषा भारती' के अंक 166 का विमोचन किया जाएगा। यह अंक महिला सशक्तिकरण पर आधारित है जिसमें अपने-अपने क्षेत्रों में ख्याति प्राप्त महिलाओं के साक्षात्कार तथा ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर लेख समाहित किए गए हैं। मालूम हो कि राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रत्येक वित्तीय वर्ष में चार क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं। वर्ष 2023-24 का पहला आयोजन मुंबई, दूसरा जोधपुर तथा तीसरा बेंगलुरु में किया जा चुका है तथा यह इस वित्तीय वर्ष का चौथा और अंतिम आयोजन सिलीगुड़ी में किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राजभाषा विभाग द्वारा सूचना प्रवेधन प्रणाली के माध्यम से सभी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की रिपोर्ट विभाग को अनिलाइन प्रेषित करने की सुविधा है, जिसके अंतर्गत सभी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को यूजर आईडी और पासवर्ड उपलब्ध कराए गए हैं।



बाएं से सहायक निदेशकनिर्मल दुबे, अध्यक्ष नराकास सिलीगुड़ी वीरेंद्र सिंह, संयुक्त सचिव, राजभाषाडॉ मीनाक्षी जौली, उप सचिव राजभाषा अनिल कुमार, निदेशक पीआईबी अब्दुल हमीद, परामर्शदाता, पूर्वोत्तर के बदरी यादव ·सन्मार्ग

इसके द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों वेबसाइट पर लॉग-इन कर कार्यसूची, कार्यवृत्त आदि सभी संगत सूचनाएं राजभाषा विभाग की ऑनलाइन भेजती हैं और इन्हीं सूचनाओं के आधार पर पुरस्कारों का मूल्यांकन किया जाता है। आज के कार्यक्रम में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के निष्पादन हेतु पुरस्कार विजेताओं को प्रमाणपत्र तथा शील्ड देकर सम्मानित किया जाएगा।

सिलीगुड़ी में पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्रीय संयुक्त राजभाषा सम्मेलन की शुरुआत

केंद्रीय मंत्री निशीथ प्रमाणिक ने किया उद्घाटन

सिलीगुड़ी (संवाददाता)। केंद्रीय गृह राज्य मंत्री निशीथ प्रमाणिक ने आज सिलीगुड़ी में पूर्वी और उत्तर पूर्वी क्षेत्र के लिए एक दिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का उद्घाटन किया।



समारोह में बोलते हुए मंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर देश की सभी महिलाओं को शुभकामनाएं दीं। गृह राज्य मंत्री ने कहा कि भारत अनेक भाषाओं का देश रहा है। हिंदी दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में भाषाओं की अनेकता सभी को एकजुट करती है। उन्होंने कहा कि हिंदी एक लोकतांत्रिक भाषा रही है। इसने विभिन्न भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई भाषाओं को भी सम्मान दिया है और उनकी शब्दावली, वाक्यों और व्याकरण नियमों को अपनाया है।

प्रमाणिक ने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन के कठिन दिनों में हिंदी अभूतपूर्व भूमिका निभाई। इसने कई भाषाओं और बोलियों में बंटे देश में एकता की भावना पैदा की। संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ने देश में पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता आंदोलन और आजादी के बाद हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। मातृभाषाओं समृद्ध राजभाषा के रूप में उभरेंगी। मंत्री ने 2022-23 के दौरान राजभाषा में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न विभागों को शील्ड और प्रमाण पत्र भी वितरित किए।

आपकी जुबान में आपके दिल की बात

सेंटिनल

नगर संस्करण

गुवाहाटी और डिब्रुगढ़ से एक साथ प्रकाशित

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान शिलांग का हिंदी पखवाड़ा का समापन



शिलांग : कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 29 सितम्बर को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन माननीय मुख्य अतिथि श्रीमती जीन एस. डखार, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लेडीकिन कॉलेज, शिलांग एवं तीनों कार्यालयों के समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 29 सितम्बर को हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन माननीय मुख्य अतिथि श्रीमती जीन एस. डखार, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लेडीकिन कॉलेज, शिलांग एवं तीनों कार्यालयों के समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया। इस अवसर पर डॉ. डी. अनीश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिकाओं क्रमशः पूर्वाशा का 32 वें अंक और नवीन 'पूर्वांचल संदेश' का 18 वें अंक, का विमोचन मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की पूर्वाशा पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार से क्रमशः अमित कुमार बर्मन, निवेदिता शुक्ल वैद्य और हिमाशुभ्रा चक्रवर्ती को नकद पुरस्कार सहित प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिकाओं क्रमशः पूर्वाशा का 32 वें अंक और नवीन 'पूर्वांचल संदेश' का 18 वें अंक, का विमोचन मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की 'पूर्वाशा' पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों में क्रमशः अमित कुमार बर्मन, निवेदिता शुक्ल वैद्य और श्रीमती हिमाशुभ्रा चक्रवर्ती को नकद पुरस्कार सहित प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

शिलांग में प्रधान महालेखाकार कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह संपन्न



शिलांग, 1 अक्टूबर (एएनआई): कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) मेघालय, शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग एवं क्षेत्रीय संसाधन निर्माण एवं ज्ञान केंद्रालय, शिलांग, द्वारा गत 29 सितंबर को हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह संयुक्त रूप से मनाया गया। कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 29 सितम्बर को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन मुख्य अतिथि जीन एस. डखार, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लेडीकिन कॉलेज, शिलांग एवं तीनों कार्यालयों के समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया। इस अवसर पर डॉ. डी. अनीश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग ने अपने स्वागत भाषण में सभा में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने अवगत कराया कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य गैर-हिंदी भाषी कार्मिकों को हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिंदी भाषा में दक्ष बनाना है। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने से कार्मिकों का हिंदी में काम करने के प्रति आत्मविश्वास भी उत्पन्न होता है। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के सर्वोत्तम अनुभाग को वर्ष 2022-23 के लिए हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा रनिंग शील्ड प्रदान किए गए तथा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन एवं हस्तलेखन इत्यादि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार से क्रमशः अमित कुमार बर्मन, निवेदिता शुक्ल वैद्य और हिमाशुभ्रा चक्रवर्ती को नकद पुरस्कार सहित प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के सर्वोत्तम अनुभाग को वर्ष 2022-23 के लिए हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु मुख्य अतिथि के कर-कमलों द्वारा रनिंग शील्ड प्रदान किए गए तथा विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं जैसे, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन एवं हस्तलेखन इत्यादि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए उपहार समूह अधिकारियों के कर-कमलों द्वारा प्रदान किए गए। अंत में इस वर्ष हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग के उप महालेखाकार (प्रशासन), सागर विजय काले के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

दैनिक पूर्वोदय

नई दिल्ली, नमी अंक

शिलांग में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) मेघालय शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) मेघालय, शिलांग एवं क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान शिलांग का संयुक्त कार्यक्रम



शिलांग, 1 अक्टूबर (वि.सं.)। कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 29 सितंबर को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन मुख्य अतिथि जीनएस डखार, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लेडीकिन कॉलेज, शिलांग एवं तीनों कार्यालयों के समूह अधिकारियों के कर-कमलों द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया।

इस अवसर पर डॉ. डी. अनीश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग ने अपने स्वागत भाषण में सभा में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में राजभाषा से संबंधित विविध जानकारियां दीं तथा कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की। उन्होंने अवगत कराया कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य गैर-हिंदी भाषी कार्मिकों को हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिंदी भाषा में दक्ष बनाना है। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कार एवं प्रोत्साहन राशियां प्रदान की जाती हैं, जिनसे उन्हें हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलती है। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने से कार्मिकों का हिंदी में काम करने के प्रति आत्मविश्वास भी उत्पन्न होता है।

इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिकाओं क्रमशः पूर्वाशा के 32वें अंक और नवीन पूर्वांचल संदेश के 18वें अंक का विमोचन मुख्य अतिथि के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग के उप महालेखाकार (प्रशासन), सागर विजय काले के धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।



सम्पादकीय

भाषा का संबंध संस्कृति और संस्कारों से है । पत्रिका एक माध्यम है, जो भाषा के द्वारा स्थानीय संस्कृति तथा संस्कारों की खुशबू बिखेरती है । पूर्वोत्तर एवं हिन्दीतर भाषी क्षेत्र में स्थित इस कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "पूर्वाशा" के जरिए न केवल हम राजभाषा को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं, अपितु समस्त पाठकों को मेघालय के प्राकृतिक व मनोरम दृश्यों से भी परिचित कराने की कोशिश करते हैं ।

नई सूचना क्रांति तथा प्रौद्योगिकी के आगमन से समाज में हो रहे परिवर्तनों के साथ-साथ हिन्दी का तकनीकी प्रयोग भी बहुत आवश्यक हो गया है । विश्व की सबसे मधुर, सहज और सरल तथा वैज्ञानिक भाषा एवं भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हिन्दी की ई-पत्रिका प्रकाशित करने से हिन्दी अपना संदेश लिए बृहत्तर क्षेत्र तक सहजता से पहुँचेगी । "पूर्वाशा" के माध्यम से हमारा निरन्तर प्रयास बना रहेगा कि पूर्वोत्तर सहित पूरे देश में हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास होता रहे तथा हिन्दी के प्रति सभी अपनी निष्ठा बनाए रखें ।

वास्तव में इस पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के दिन प्रतिदिन के कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना है । इसे आसान, रोचक और तथ्यपरक रूप से सँवारने में हमारे प्रयत्न में कुछ त्रुटियाँ हो सकती हैं, अतः भविष्य में इसे और अधिक सुदृढ़ बनाने हेतु आपके बहुमूल्य सुझाव एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है ।

शुभकामनाओं सहित ।

एस. सामिदुरै

(एस. सामिदुरै)
सम्पादक एवं
उप महालेखाकार (प्रशासन)

RNI No. ASSHIN/2005/15049 PRATAH KHABAR, Guwahati, Sunday, 1 October, 2023

सच से समझौता नहीं

प्रातः खबर

शिलांग में हिंदी पखवाड़े में हिंदी को बढ़ावा देने पर बल

शिलांग, 29 सितंबर (स.सं.)। मेघालय और केंद्रीय क्षेत्रीय निर्माण एवं शहर संगठन, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 29 सितम्बर को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में हिन्दी पखवाड़े का समापन हुआ। हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन माननीय मुख्य अतिथि जीत एस. डकार, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, नेहरू कॉलेज, शिलांग एवं होनरी कार्यालय के अधिकारियों ने दीप प्रज्वलित किया। इस अवसर पर डॉ. अरोड़, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग ने अपने स्वागत भाषण में क्षेत्र में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं नौटी कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने वक्तव्य में राजभाषा से संबंधित विभिन्न जानकारियों दीं तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की। उन्होंने अवगत कराया कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य गैर-हिंदी भाषी कर्मियों को हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिंदी भाषा में एवं बनाना है। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कार एवं प्रोत्साहन राशियां प्रदान की जाती हैं, जिससे उन्हें हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलती है। इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने में कर्मियों का हिंदी में काम करने के प्रति आत्मविश्वास भी बढ़ा होता है। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिकाओं क्रमशः पूर्वांश का 32 वें अंक और नवीन पूर्वांचल संदेश का 18 वें अंक, का विमोचन मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की पूर्वांश पत्रिका के सौजेक्ट स्वरूपकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों से क्रमशः अमित कुमार वर्मन, विक्रेशिता शुक्ल पेश शामिल थे।

गुवाहाटी व जोरहाट से एक साथ प्रकाशित

सच से समझौता नहीं

प्रातः खबर

RNI No. ASSHIN/2005/15049 PRATAH KHABAR, Guwahati, Wednesday, 28 August, 2024

महालेखाकार कार्यालय में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला संपन्न



शिलांग, 27 अगस्त। हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग में आज कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के शुरुआत में पी.आर. रिंगख्लेम, प्रधान महालेखाकार के सचिव ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। इस अवसर पर संकाय सदस्य श्रीमती असित कमल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, महानिदेशालय असम राइफल्स और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लाइटकोर, शिलांग उपस्थित थे। अपने उद्बोधन भाषण में रिंगख्लेम जी ने कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली व्यवहारिक हिन्दी का अभ्यास करवाना है, जिससे कार्यशालाओं में सम्मिलित होने वाले अधिकारीगण/कर्मचारीगण मौलिक रूप से हिन्दी में मसौदे और टिप्पणियां लिख सकें। यह गर्व की बात हैं कि राजभाषा विभाग के निदेशानुसार हम हिन्दी कार्यशाला का आयोजन कर रहे है। उन्होंने कहा कि कार्यशाला के माध्यम से हम हिन्दी में कार्य करने की झिझक को दूर कर सकें। इसके अलावा मसौदा लेखन, पत्र-लेखन आदि में भी राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करने में हम सफल होंगे। कार्यशाला में संकाय सदस्य के रूप में श्रीमती असित कमल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, महानिदेशालय असम राइफल्स और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लाइटकोर, शिलांग उपस्थित थे। कार्यशाला में 14 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिए। कार्यशाला का समापन हिन्दी अधिकारी मुहम्मद जियाऊल हक के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।



कार्यशाला के दौरान उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी

गुवाहाटी और जोरहाट से प्रकाशित

पूर्वांचल प्रहरी

पूर्वोत्तर भारत का प्रथम हिंदी दैनिक

36 बुधवार 28 अगस्त 2024

Whirlpool
0 COST EMI ₹10000 Exchange Offer
Sale Starts
REETESH digital
Always for you
Dhirenpara, Guwahati
8486023908/11

मेघालय के महालेखाकार कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन संपन्न

पूर्वांचल प्रहरी कार्यालय संवाददाता

शिलांग : हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा देने हेतु कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग में आज 27 अगस्त, को अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रारंभ में पी.आर. रिंगख्लेम, प्रधान महालेखाकार के सचिव ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। इस अवसर पर संकाय सदस्य श्रीमती असित कमल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, महानिदेशालय असम राइफल्स और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लाइटकोर, शिलांग उपस्थित थे। अपने उद्घाटन भाषण में पी.आर. रिंगख्लेम जी ने कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य सरकारी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली व्यवहारिक हिन्दी का अभ्यास करवाना है, जिससे कार्यशालाओं में सम्मिलित होने वाले अधिकारीगण/कर्मचारीगण मौलिक रूप से हिन्दी में मसौदे और टिप्पणियां लिख सकें। यह गर्व की बात हैं कि राजभाषा विभाग के निदेशानुसार हम हिन्दी कार्यशाला का आयोजन कर रहे है। उन्होंने कहा कि कार्यशाला के माध्यम से हम हिन्दी में कार्य करने की झिझक को दूर कर सकें। इसके अलावा मसौदा लेखन, पत्र-लेखन आदि में भी राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करने में हम सफल होंगे। कार्यशाला में संकाय सदस्य के रूप में श्रीमती असित कमल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, महानिदेशालय असम राइफल्स और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लाइटकोर, शिलांग उपस्थित थे। कार्यशाला में 14 अधिकारी एवं कर्मचारियों ने भाग लिए। कार्यशाला का समापन हिन्दी अधिकारी मुहम्मद जियाऊल हक के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

Total no of pages - 12
RNI Regn No: 13759/57
Scan and visit our website for more e-paper

The Shillong Times

ESTABLISHED 1945
Postal Regn. No. ME/749/2024-2026

SHILLONG, WEDNESDAY, AUGUST 28, 2024
www.theshillongtimes.com

Hindi workshop for govt officials

By Our Reporter

SHILLONG, Aug 27: A one-day Hindi workshop aimed at promoting the use of Hindi in official work was held at the office of the Principal Accountant General (Audit), Meghalaya here on Tuesday. A total of 14 officers and employees attended the workshop.

Secretary to the Principal Accountant General, PR Ryngkhlem, welcomed the participants. The workshop featured Senior Hindi Officer from the Directorate General Assam Rifles and a member of the Town Official Language Implementation Committee, Laitkor, Shillong, Asit Kamal, as the faculty member.

Kamal conducted two sessions — 'Noting and Draft Writing' and 'Hindi Correspondence' — during the workshop. Participants were given practical exercises to reinforce their learning.

गुवाहाटी व जोरहाट से एक साथ प्रकाशित

सच से समझौता नहीं

प्रातः खबर

RNI No. ASSHIN/2005/15049 PRATAH KHABAR, Guwahati, Wednesday, 28 August, 2024

महालेखाकार कार्यालय में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला संपन्न



शिलांग, 27 अगस्त। हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग में आज कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के शुरुआत में पी.आर. रिंगख्लेम, प्रधान महालेखाकार के सचिव ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। इस अवसर पर संकाय सदस्य श्रीमती असित कमल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, महानिदेशालय असम राइफल्स और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लाइटकोर, शिलांग उपस्थित थे। अपने उद्घाटन भाषण में रिंगख्लेम जी ने कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य सरकारी काम-काज में प्रयुक्त होने वाली व्यवहारिक हिन्दी का अभ्यास करवाना है, जिससे कार्यशालाओं में सम्मिलित होने वाले अधिकारीगण/कर्मचारीगण मौलिक रूप से हिन्दी में मसौदे और टिप्पणियां लिख सकें। यह गर्व की बात हैं कि राजभाषा विभाग के निदेशानुसार हम हिन्दी कार्यशाला का आयोजन कर रहे है। उन्होंने कहा कि कार्यशाला के माध्यम से हम हिन्दी में कार्य करने की झिझक को दूर कर सकें। इसके अलावा मसौदा लेखन, पत्र-लेखन आदि में भी राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करने में हम सफल होंगे। कार्यशालाओं के जरिए लिखावट एवं पत्राचार में भी सुधार हो सकते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की है, कि सभी प्रतिभागी इस कार्यशाला का भरपूर लाभ उठायेंगे साथ ही इस कार्यशाला के माध्यम से सभी अधिकारीगण और कर्मचारीगण को हिन्दी में काम करने में सहायता मिलेगी। उक्त कार्यशाला में संकाय सदस्य के रूप में असित कमल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, महानिदेशालय असम राइफल्स और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लाइटकोर, शिलांग उपस्थित थे, जिन्होंने प्रथम सत्र में टिप्पण एवं मसौदा लेखन और द्वितीय सत्र में हिंदी पत्राचार पर व्याख्यान किया तथा प्रतिभागियों द्वारा इसका अभ्यास भी कराया। इस कार्यशाला में कुल 14 अधिकारी एवं कर्मचारी ने भाग लिए। उक्त कार्यशाला का समापन समारोह हिंदी कक्ष के हिंदी अधिकारी, मुहम्मद जियाऊल हक के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

आपकी जुबान में आपके दिल की बात

नेटिनल

नगर संस्करण
गुवाहाटी और सिलचर से एक साथ प्रकाशित

R.HINDI DAILY, GUWAHATI पंजीयन संख्या-240013/20 गुवाहाटी 28 अगस्त 2024, बुधवार, संवत 2081, ISSUE 1946, भाद्र मास, कृष्ण पक्ष 9 August 28, 2024 Wednesday

शिलांग में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला संपन्न



शिलांग, 27 अगस्त (एसं)। हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग में 27 अगस्त, 2024 को कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला के प्रारंभ में पी.आर. रिंगख्लेम, प्रधान महालेखाकार के सचिव ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। इस अवसर पर संकाय सदस्य श्रीमती असित कमल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, महानिदेशालय असम राइफल्स और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लाइटकोर, शिलांग उपस्थित थे। अपने उद्बोधन भाषण में रिंगख्लेम जी ने कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य सरकारी काम-काज में प्रयुक्त होने वाली व्यवहारिक हिन्दी का अभ्यास करवाना है, जिससे कार्यशालाओं में सम्मिलित होने वाले अधिकारीगण/कर्मचारीगण मौलिक रूप से हिन्दी में मसौदे और टिप्पणियां लिख सकें। हमारे कार्यालय के लिए यह गर्व की बात है कि राजभाषा विभाग के निदेशानुसार हम हिन्दी कार्यशाला का आयोजन कर रहे है जिससे, कार्यालयीन काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा मिले एवं कार्यशाला के माध्यम से हम हिंदी में कार्य करने की झिझक को दूर कर सकें। इसके अलावा मसौदा लेखन, पत्र-लेखन आदि में भी राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने में हम सफल होंगे। कार्यशालाओं के जरिए लिखावट एवं पत्राचार में भी सुधार हो सकते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की है, कि सभी प्रतिभागी इस कार्यशाला का भरपूर लाभ उठायेंगे साथ ही इस कार्यशाला के माध्यम से सभी अधिकारीगण और कर्मचारीगण को हिन्दी में काम करने में सहायता मिलेगी। उक्त कार्यशाला में संकाय सदस्य के रूप में असित कमल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, महानिदेशालय असम राइफल्स और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, लाइटकोर, शिलांग उपस्थित थे, जिन्होंने प्रथम सत्र में टिप्पण एवं मसौदा लेखन और द्वितीय सत्र में हिन्दी पत्राचार पर व्याख्यान किया तथा प्रतिभागियों द्वारा इसका अभ्यास भी कराया। इस कार्यशाला में कुल 14 अधिकारी एवं कर्मचारी ने भागलिए। उक्त कार्यशाला का समापन समारोह हिन्दी कक्ष के हिंदी अधिकारी, मुहम्मद जियाऊल हक के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।



आपके पत्र

1. आपकी पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकुमनाएं एवं इसके प्रेषण के संबंध में आभार स्वीकार करें । विभागीय पत्रिकाएं अपने कार्यालय एवं अपने राज्य की संस्कृति और कार्यप्रणाली का उत्तम चित्रण करती है । इनके माध्यम से हमें कार्यालय एवं समाज में हो रही घटनाओं का सुंदर चित्रण प्राप्त होता है । आपकी पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ समान रूप से सरल, सहज, रोचक एवं ज्ञानवर्धक तो है ही इसके अतिरिक्त पत्रिका की साज-सज्जा एवं मुद्रण भी अति उत्तम है, जिसके लिए लेखकों एवं सम्पादक मंडल के सदस्यों को विशेष बधाई ।

पत्रिका के सम्मानित सम्पादक मंडल के सदस्यों और हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका "पूर्वाशा" के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-
सहायक लेखा अधिकारी - हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
जम्मू एवं कश्मीर, श्रीनगर

2. "पूर्वाशा" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों-कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है । विशेषकर श्री सोनु कुमार साव का आलेख "साहित्य के समाजशास्त्र की जरूरत", श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप का आलेख "मेहनत का फल", मुहम्मद जियाऊल हक का आलेख "पूर्वोत्तर की भाषाएं और हिंदी", श्री अमित कुमार की कविता "संघर्ष भरा जीवन", श्री अभिनंदन गोस्वामी की कविता "धरती" और श्री संदरसन सुन की कविता "सपने" अत्यंत ही उत्कृष्ट और सराहनीय है । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक तथा पठनीय है। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा और उत्साह का संचार होगा । पत्रिका की साज-सज्जा और अंतर्निहित फोटो आकर्षक एवं मनोरम है ।

हिंदी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "पूर्वाशा" के उज्ज्वल भविष्य के लिए "आकांक्षा" परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
कोलकाता

3. पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं रूपरेखा अति आकर्षक है । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं वैविध्यपूर्ण है जिसके श्रेष्ठ संकलन के लिए संपादक मंडल एवं सभी रचनाकार प्रशंसा के पात्र हैं । आपकी पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है । पत्रिका के आगामी अंक के लिए ढेर सारी शुभकामनाएँ ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
बेंगलूरू



4. पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है । जैसे - श्रीमती रोज बेगम की रचना "काजीरंगा नेशनल पार्क", श्री चिराग राजपूत की रचना "कृष्ण लीलाएं एक रहस्य", श्री यश नायक की रचना "पेड़ो की कीमत" और श्रीमती मिशा की रचना "गरीबी" ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी - राजभाषा
महानिदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) का कार्यालय
मुंबई

5. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं । हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है ।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ ।

ह/-
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी कक्ष)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

6. पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं प्रशंसनीय है । पत्रिका में समाहित समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं पठनीय है । पत्रिका को पढ़ने से ऐसा प्रतीत होता है कि कार्यालय के सभी वर्गों ने इस पत्रिका को अपने द्वारा रचित रचना से उत्कृष्ट बनाने का प्रयास किया है। रचनाकारों को साधुवाद । सुश्री शाहनाज बेगम द्वारा रचित "शिलांग - बादलों के राज्य का एक खूबसूरत मुकाम", श्रीमती लीसामाई सिएम द्वारा रचित "फूलों की शक्ति", मुहम्मद जियाऊल हक द्वारा रचित "पूर्वोत्तर की भाषाएं और हिंदी", श्री यश नायक द्वारा रचित "पेड़ों की कीमत", श्री चिराग राजपूत की रचना "कृष्ण लीलाएं एक रहस्य" विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं ।

"ग", क्षेत्र के कार्यालयों में अवस्थित होने के बावजूद वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "पूर्वाशा" में हिंदी रचनाओं की बहुलता एवं अनेकता अपने आप में आदर्श उदाहरण है । यह पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति करते हुए राजभाषा हिंदी की प्रगति में अपना योगदान देता रहे, इसी शुभकामना के साथ समस्त रचनाकारों एवं सम्पादकीय मण्डल को पुनः बधाई एवं आभार ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी - हिंदी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

7. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ इसके प्रकाश से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.), केरल, तिरूवनंतपुरम



8. पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं सराहनीय है । पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है ।

"पूर्वाशा" पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
असम, गुवाहाटी

9. पत्रिका का साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक एवं मनभावन है । पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र भी बहुत सुंदर लग रहे है आपका कार्यालय "ग" क्षेत्र में होने के बावजूद हिंदी के प्रति इतना लगाव अत्यधिक सराहनीय है । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं । प्राकृतिक सौन्दर्य को दर्शाती सुश्री शाहनाज बेगम का लेख "शिलांग - बादलों के राज्य का एक खूबसूरत मुकाम" अत्यंत प्रशंसनीय है । अन्य लेखों में मुहम्मद जियाऊल हक की रचना "पूर्वोत्तर में भाषाएं और हिंदी", श्री यश नायक द्वारा रचित "पेड़ों की कीमत", श्रीमती रेखा राजपूत की रचना "एक मुस्कान" उल्लेखनीय हैं ।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई । पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी - प्रशासन
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी-II)
मध्यप्रदेश, ग्वालियर

10. पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रूचिकर, एवं प्रेरणादायक हैं । इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं ।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है । सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

11. राजभाषा को उन्नत करने में हिंदी पत्रिकाएं अहम भूमिका निभाते है । इस पत्रिका की आवरण पृष्ठ बहुत ही मनमोहक है । पत्रिका में निहित विविध विषयों पर धारित रचनाएं काफी ज्ञानवर्धक हैं, विशेषकर - "फूलों की शक्ति" एवं "बचपन" ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन पत्रिका परिवार को बधाई ।

शुभकामनाएं सहित ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
बिहार, पटना



12. पत्रिका में सभी लेख, रचनाएं और विचार सरल, पठनीय एवं प्रशंसनीय है । इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हमारे कार्यालय आई.सी.आई.एस.ए., नोएडा की तरफ से हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी (प्रशासन)
आई.सी.आई.एस.ए., नोएडा

13. पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है । कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं । श्रीमती निवेदिता सुक्लावैध की "सुकून-ए-जिंदगी", श्री सोनु कुमार साव की "साहित्य के समाजशास्त्र की जरूरत", श्रीमती लीसामाई सिएम द्वारा रचित "फूलों की शक्ति", श्री अमित कुमार वर्मण की "संघर्ष भरा जीवन" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है ।

पत्रिका को सुरूचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है । पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ ।

ह/-
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब, चंडीगढ़

14. पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुन्दर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है । पत्रिका में समाविष्ट ऊर्जा (सुमित कुमार) धरती (अभिनंदन गोस्वामी) और गरीबी (श्रीमती मिशा) जैसी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय है । पत्रिका में मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है ।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं । कृपया अपना यही सार्थक प्रयास निरंतर जारी रखें ।

ह/-
(महेश कुमार वर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
राजभाषा अनुभाग

15. पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं पठनीय एवं प्रशंसनीय है । विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है । पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएं ।

ह/-
हिन्दी अधिकारी
प्रधान निदेशक रक्षा - वाणिज्यिक
बेंगलोर



16. पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं । विशेष रूप से श्री विजय छेत्री का लेख "महात्मा गांधी के बारे में कुछ रोचक तथ्य", श्रीमती रोज बेगम का लेख "काजीरंगा नेश्नल पार्क" एवं श्रीमती लीसामाई सिएम का लेख "फूलों की शक्ति" अत्यंत पठनीय है । पत्रिका में सम्मिलित सभी चित्र अत्यंत मनोहर एवं रोचक है । आपकी पत्रिका राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है ।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, सम्पादन हेतु समदपक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

ह/-
हिन्दी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखंड, देहरादून

17. पत्रिका में सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है । पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी खूबसूरती से वर्णन किया है । इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र है ।

पत्रिका के माध्यम से "ग" क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु आप सभी लेखकों का योगदान अत्यंत सराहनीय है । निसंदेह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालयी कार्मिकों की लेखन क्षमता को बढ़ावा देने में भी एक प्रेरक की भूमिका अदा करेगी । पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है ।

आपकी पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्ही शुभकामनाओं के साथ "गिरनार" परिवार को आपकी पत्रिका के अगले अंक की प्रतिक्षा रहेगी ।

ह/-
वरिष्ठ लेखा अधिकारी - हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
गुजरात, राजकोट

18. पत्रिका के मुखपृष्ठ पर मेघालय राज्य के प्राकृतिक सौंदर्य की छवि अत्यंत मनोरम तथा दर्शनीय प्रतीत हो रही है । सुश्री शाहनाज बेगम का लेख "शिलांग - बादलों के राज्य का एक खूबसूरत मुकाम" पत्रिका के मुखपृष्ठ की छवि को सार्थकता प्रदान करती है । मुहम्मद जियाऊल हक की रचना "पूर्वोत्तर में भाषाएं और हिंदी", श्री अंटोन मरबनियांग की कहानी "गधे की चतुराई" सुश्री बंदरिशा पिंगरूप की कहानी "माँ की ममता" तथा श्रीमती रोज बेगम का लेख "काजीरंगा नेश्नल पार्क" आदि रचनाएं सराहनीय है । अन्य सभी रचनाएँ भी पठनीय एवं विचारणीय है ।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय निदेशक, वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय
बेंगलूरू



19. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक है । पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है । साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है । कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा चित्ताकर्षक है । इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं वो है - "ऊर्जा", "काजीरंगा नेशनल पार्क" "सफलता का मूल मंत्र" "पूर्वोत्तर में भाषाएं और हिंदी" आदि ।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी - हिन्दी कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
पश्चिम बंगाल

20. पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है । विशेषकर श्रीमती संदलीन खोंगवीर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक की रचना 'रिश्ता', श्री सोनु कुमार साव, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'साहित्य के समाजशास्त्र की जरूरत', श्रीमती लिसामाई सिएम, वरिष्ठ लेखापरीक्षक की रचना 'फूलों की शक्ति' आदि उल्लेखनीय है ।

पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई । पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाए ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
महाराष्ट्र, नागपुर

21. पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट बोधगम्य, रोचक तथा संग्रहणीय हैं। ये रचनाएं राजभाषा के संबंधित नीतियों के अनुपालन तथा प्रचार-प्रसार हेतु बनाए गए विविध कार्यक्रमों में बहुत ही उपयोगी एवं सहायक है । पत्रिका में सम्मिलित सुश्री स्निग्धा मिश्रा की कविता "आजादी", श्री सोनु कुमार साव का लेख "साहित्य के समाजशास्त्र की जरूरत" तथा सुश्री बंदरिशा पिंगरूप का लेख "माँ की ममता" विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल प्रकाशन के लिए पुनः बधाई और पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिये हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ लेखाधिकारी
राजभाषा कक्ष
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
राजस्थान, जयपुर

22. पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं छायांकन अति आकर्षक है । पत्रिका की सभी रचनाएं उत्कृष्ट कोटि की हैं । विशेषकर श्रीमती निबेदिता शुक्लवैद्य की कविता "सुकूने-ए-जिंदगी", श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप की कहानी "मेहनत का फल", श्री सुमित कुमार का लेख "ऊर्जा", श्रीमती मुमताज बेगम का लेख "सफलता का मूल मंत्र" आदि रचनाएं सराहनीय एवं संग्रहणीय हैं । एक ही पत्रिका में इतनी सारे विषयों को बखूबी समाहित किया गया है जो सराहनीय है । कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका में चार-चाँद लगा रहे हैं ।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ओडिसा, भुवनेश्वर



23. पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं "पूर्वोत्तर में भाषाएं ओर हिंदी", "पेड़ों की कीमत" एवं "चाय की खेती" बहुत ही आकर्षक है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ अत्यंत रूचिकर एवं ज्ञानवर्धक है । पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएं ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ

24. इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रूचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण है । पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है । कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं । श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप की "मेहनत का फल", श्री अमित कुमार वर्मन की "संघर्ष भरा जीवन", श्रीमती मिशा की "गरीबी", सुश्री शाहनाज बेगम की "शिलांग - बादलों के राज्य का खूबसूरत मुकाम", श्रीमती मुमताज बेगम की "सफलता का मूल मंत्र" रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय है ।

पत्रिका को सुरूचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादक मंडल को बधाई । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान लेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़

25. ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहारी बन पड़ा है । पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है । विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यंत रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है । इस अंक में प्रकाशित सुश्री मौसमी बैद्य द्वारा लिखित "जर्नी अहफ लाइफ", श्रीमती निवेदिता शुक्लवैदय द्वारा लिखित "सुकून-ए-जिंदगी", सुश्री बंदरिशा पिंगरूप द्वारा लिखित "सुविचार", श्रीमती मुमताज बेगम द्वारा लिखित "सफलता का मूल मंत्र", श्री चिराग राजपूत द्वारा लिखित "कृष्ण लीलाएँ - एक रहस्य", श्रीमती रेखा राजपूत द्वारा लिखित "एक मुस्कान", श्री राजेश कमल राजपूत द्वारा लिखित "चुटकुले" और श्रीमती मिशा द्वारा लिखित "गरीबी" विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मकता मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है । यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है । पत्रिका भविष्य में और बेहतर करें यही कामना है । पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
तमिलनाडु, चेन्नई

26. पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत ही मनमोहक है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सराहनीय एवं उच्च कोटि की है । श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप की रचना "मेहनत का फल", मुहम्मद जियाऊल हक की रचना "पूर्वोत्तर की भाषाएं और हिंदी", श्री संदरसन सुन की रचना "सपने", श्री मिथिलेश कुमार की रचना "देशप्रेम" विशेष रूप से प्रशंसनीय है ।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई ।

ह/-
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओडिसा, भुवनेश्वर



27. पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा काफी सुंदर एवं आकर्षक है । पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है । आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी ।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएँ ।

ह/-
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

28. पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं । पत्रिका में समाहित श्री सोनु कुमार साव का लेख "साहित्य के समाजशास्त्र की जरूरत", मुहम्मद जियाऊल हक की रचना "पूर्वोत्तर की भाषाएं और हिंदी", श्री नीरज कुमार गुप्ता का लेख "आजादी का अमृत महोत्सव" तथा मुहम्मद अरिफऊल हक का लेख "चाय की खेती" बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख है।

इसके अतिरिक्त श्रीमती निवेदिता शुक्लवैदय द्वारा लिखित "सुकून-ए-जिंदगी", श्रीमती लिसामाई सिएम की कविता "फूलों की शक्ति", श्री अमित कुमार बर्मन की कविता "संगर्ष भरा जीवन" तथा सुश्री मिशा की कविता "गरीबी" पठनीय हैं । पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र है । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा का कार्यालय
चंडीगढ़

29. पत्रिका के आवरण-पृष्ठ पर छायांकित एवं अन्य विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छे लगे । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है । विशेषकर सुश्री शाहनाज बेगम की "शिलांग दृ बादलों के राज्य का खूबसूरत मुकाम", में इस राज्य की वर्णन किया गया है । मुहम्मद जियाऊल हक की रचना "पूर्वोत्तर की भाषाएं और हिंदी" में देश के पूर्वोत्तर में स्थित राज्यों और उनकी भाषाओं का उल्लेख किया गया है । श्री कुमार शुक्ल की रचना "जीवन की परिभाषा", में जीवन के विविध रूपों को दिखाया गया है । श्री चिराग राजपूत द्वारा लिखित "कृष्ण लीलाएँ - एक रहस्य" में बालक कृष्ण की विभिन्न लीलाएँ व्यक्त की गई है । इसके अलावा श्रीमती रेखा राजपूत द्वारा लिखित "एक मुस्कान", सुश्री स्निग्धा मिश्रा की कविता "सपनें", श्री दिलीप कुमार क्षेत्री की कविता "जग में सबसे प्यारी माँ" आदि रचनाएँ अत्यंत ही सराहनीय है ।

पत्रिका के सफल संपादन एवं संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) पश्चिम बंगाल

30. पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की है । पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अति सुंदर है । जर्नी अहफ लाइफ, सुकून-ए-जिंदगी, सुविचार, पूर्वोत्तर की भाषाएँ और हिंदी, संघर्ष भरा जीवन, धरती, गरीबी आदि रचनाएँ विशेष रूप से सराहनीय एवं रूचिकर है । उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र है । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चंडीगढ़

31. पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ मूलतः लेख, कविताएँ, प्रेरक-प्रसंग इत्यादि अत्यंत मनोहर, सुपाठय, बोधगम्य तथा रूचिकर है । यह पत्रिका निःसंदेह राजभाषा की उन्नयन का प्रतीक है । राजभाषा कार्यान्वयन के प्रति आप सभी का यह समर्पण एक उज्ज्वल भविष्य की ओर इशारा कर रहा है। पत्रिका में मुद्रित चित्र और और इसकी साज-सज्जा वास्तव में चित्ताकर्षक है।

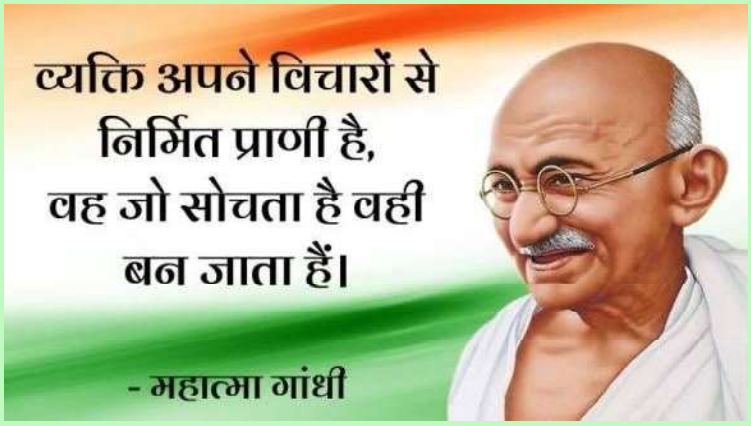
हमें विश्वास है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंक के लिए हार्दिक शुभेच्छाएँ ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
कर्नाटक, बेंगलूरू

32. पत्रिका में सम्मिलित रचनाएँ, लेख, कविताएँ, प्रेरक-प्रसंग इत्यादि उत्कृष्ट, पठनीय और सरल भाषा में है । विशेषतः श्री आंटोनमारबियांग की "गधे की चतुराई", श्री केरिओनाल्ड की "मेहनत का फल" आदि रचनाएँ सराहनीय है । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगतिशील उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है । पत्रिका में संकलित चित्र और इसकी साज-सज्जा भी आकर्षक है ।

आशा है कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-
हिंदी अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
तमिलनाडु, पुदुचेरी



राष्ट्रीय एकता



सुश्री शाहनाज बेगम,
बहन-मुहम्मद जियाऊल हक,
हिंदी अधिकारी

आज भारत के विभिन्न राज्य एक दूसरे से बिछुड़ने और अलग होकर अपना मनोराज्य स्थापित करने के लिए आन्दोलित हैं । उदाहरण स्वरूप हम पूर्वोत्तर को ले सकते है जहाँ आज भी असम राज्य से अलगाव होकर "बोड़ोलेण्ड" के नाम से एक अलग स्वायत्त राज्य की मांग की जा रही है । इस स्थिति में राष्ट्रीय एकता एवं भावात्मक एकता के प्रसार की अत्यन्त आवश्यकता है । अनेक भाषाओं, धर्मों एवं रीति-रिवाजों के होते हुए भी भारत एक है । विभिन्नता में अभिन्नता तथा अनेकता में एकता की भावना के कारण ही आज तक भारत एक है । भारत की इसी विशेषता से प्रभावित होकर सुप्रसिद्ध कवि मुहम्मद इकबाल ने लिखा था कि-

"यूनान, मिश्र, रोम सब मिट गए जहाँ से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी ।"

राष्ट्रीयता का प्रमुख उपकरण देश होता है जिसके आधार पर राष्ट्रीयता का जन्म तथा विकास होता है । यही कारण है कि देश की इकाई राष्ट्रीयता के लिए आवश्यक है । राष्ट्रीय एकता को खण्डित करने के उद्येश्य से कुछ विघटनकारी शक्तियाँ हमारे देश को देश न कह कर उपमहाद्वीप के नाम से संबोधित करती हैं । भौगोलिक दृष्टि से भारत के विस्तृत भूखण्ड जिसमें अनेक नदियाँ और पर्वतमालाएँ है, वे कभी-कभी बाधाएँ उत्पन्न कर देते हैं, फलस्वरूप ये शक्तियाँ संकीर्ण क्षेत्रीयता की भावनाएँ विकसित करने में सहायता करती हैं जबकि प्राचीन काल से ही भारतीय धर्म और संस्कृति ने समग्र राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रखने का सतत प्रयास किया है और आगे भी करती रहेगी ।

जहाँ तक भारत में भाषायी अनेकता का प्रश्न है, इन अनेकता में भी एकता के दर्शन लिए जा सकते हैं । उत्तर भारत की प्रायः समस्त भाषाएँ संस्कृत से निकली हैं, दक्षिणी भाषाएँ भी संस्कृत से प्रभावित है । उर्दू, अरबी और फारसी के अतिरिक्त समस्त भाषाओं की वर्णमाला भी लगभग एक जैसी है । इनमें केवल लिपि का ही अन्तर है । जो भी हो उर्दू, अरबी और फारसी भाषा हिन्दी भाषा से बोलचाल की दृष्टि में प्रायः एक सा है । वैसे भी उर्दू, अरबी और फारसी के अनेक शब्दों को हिन्दी ने अपना लिया है, जैसे दृ कानून, गिरवी आदि । रामायण, महाभारत आदि समस्त भारतीय साहित्य के मूल प्रेरणा स्रोत रहे हैं दृ इस कारण भाषायी भेद होते हुए भी प्रत्येक भाषा में बहने वाली चिन्तन धारा एक होने से राष्ट्रीय एकता बनी रहती है ।

भारत की राष्ट्रीय एकता एक शासन विधान होने के कारण भी सुदृढ़ रही है । भारतीय संविधान एक है तथा शासन की बागडोर संसद के हाथ में है । संसद की सदस्यता प्राप्त करने का अधिकार भी हमारे देश में प्रत्येक धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र एवं प्रदेश के व्यक्ति को समान रूप से है । हमारे देश में लोकतंत्रात्मक व्यवस्था होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति शासन व्यवस्था से जुड़ जाता है । इससे भी राष्ट्रीयता की भावना विकसित होती है तथा राष्ट्रीय एकता बनी रहती है।

आधुनिक यातायात एवं संचार के साधनों ने भौगोलिक रूप से विस्तृत देश को अधिक निकट ला दिया है । आज हम सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकते हैं अथवा दूरभाष आदि के माध्यम से एक-दूसरे से शीघ्र सम्पर्क कर सकते हैं । दूरियों का इस प्रकार कम होना भी हमारी एकता को बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुआ है । भौगोलिक रूप से हिमालय, विन्ध्य एवं तटीय क्षेत्रों में बंटा हुआ भारत देश एक है और हमेशा एक ही रहेगा । इस देश रूपी शरीर का हिमालय मस्तक, विन्ध्य हृदय और सागर चरण हैं । जिस प्रकार मस्तक, हृदय तथा चरणों से रहित मानव शरीर की कल्पना नहीं की जा सकती वैसे ही भारत भी अपने इन भौगोलिक अंगों से परे हटकर नहीं हो सकता। यही भारत की राष्ट्रीय एकता का मूल आधार है।

चलते रहो



श्री राजेश कमल राजपूत,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मार्टिन लूथर किंग ने कहा था, अगर तुम उड़ नहीं सकते तो दौड़ों, अगर दौड़ नहीं सकते हो तो चलो, अगर तुम चल नहीं सकते हो तो रंगो, पर निरंतर आगे बढ़ते रहो । अपनी सोच और दिशा बदलो, सफलता तुम्हारी स्वागत करेगी ।

रास्ते पर कंकड़ हो, तो भी एक अच्छा जूता पहन कर चला जा सकता है । किंतु एक अच्छे जूते के अंदर एक भी कंकड़ घुस जाए तो एक अच्छी सड़क पर भी कुछ कदम चलना मुश्किल है, यानी हम बाहर की चुनौतियों से नहीं अपने भीतर की कमजोरियों से हारते हैं । इसलिए किसी माहन ने कहा है, चलते रहो ।

डिजिटल युग की दस्तक : कागज से क्लाउड तक



श्री संजीव कुमार गणेश
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बदलते दौर का, नया एक चेहरा,
कागज से डिजिटल का, एक नया सवेरा ।

फाइलों का अंबार, जो था भारी-भरकम,
अब डिजिटल फाइलें, सुगम और सरलतम ।

कभी कागजों की सरसराहट, कलम की आवाज,
अब कीबोर्ड पर उंगलियाँ, नए सपनों की साज ।

कभी कलम की नोक से भरते थे, दफ्तर के रजिस्टर,
अब कीबोर्ड से लिखते हैं, डिजिटल दस्तावेज हर पल निरंतर ।

धूल से भरी फाइलें, अब बस यादें हैं पुरानी,
क्लाउड में सुरक्षित, दस्तावेज की अब हैं नई कहानी ।

कागज की जगह, अब स्क्रीन पर नजर,
हर दस्तावेज मिले, बस अब एक क्लिक पर ।



समय की बचत, कार्य में तेजी,
डिजिटल ने लाई, दफ्तर की नई पेशी ।

सहेजना हुआ सरल, अब खोने का है डर नहीं,
ऑनलाइन फाइलों में, सब कुछ है सुगम और सही ।

परिवर्तन की लहर, लायी नयी आशा,
दफ्तर में डिजिटल, जैसे हो नयी भाषा ।

कार्य हुई सरल, फाइलें हुई पास,
दफ्तर की दुनिया अब, डिजिटल की आस ।

कभी था कागज का वो अहसास,
उंगलियों से छूने का, पलकों में वो खास ।

कागज की फाइलों को, यादों में सजाकर,
ऑनलाइन फाइलें, अब क्लिक में पाकर ।

दोनों की खासियतें अपने पास लेकर,
हम चले कागजों से बढ़, डिजिटल के गुण लेकर ।

हिन्दी दिवस



मुहम्मद जियाऊल हक
हिंदी अधिकारी

हिन्दी दिवस प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को मनाया जाता है। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने एक मत से यह निर्णय लिया कि हिन्दी ही भारत की राजभाषा होगी। इसी महत्वपूर्ण निर्णय के महत्व को प्रतिपादित करने तथा हिन्दी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिये राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से संपूर्ण भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हर्षोल्लास के साथ हिन्दी-दिवस के रूप में मनाया जाता है।

स्वतन्त्र भारत की राजभाषा के प्रश्न पर काफी विचार-विमर्श के बाद यह निर्णय लिया गया कि जो भारतीय संविधान के भाग 17 के अध्याय 1 की धारा 343(1) में इस प्रकार वर्णित है :

"संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।"

14 सितम्बर 1949 को हिंदी दिवस के रूप में मान्यता प्रदान की गयी थी तभी से प्रतिवर्ष हम हर्षोल्लास के साथ हिंदी दिवस मनाते हैं। अंग्रेजी हमारे मनोमस्तिष्क पर इस प्रकार हावी है कि अंग्रेजी भाषा में लिखने, बोलने में गर्व का अनुभव करते हैं। अभी हम बात कर रहे हैं हिंदी की, कुछ ही क्षण बाद हम अपने बच्चों को सिखायेंगे - "ग्रेंड पा", "मौम", "डैड" आदि। ऐसे में कैसे आशा कर सकते हैं कि हमारी भाषा हिंदी अपना स्थान प्राप्त करेगी। हिंदी भाषा जिसका स्थान विश्व में तीसरा है। विश्व के अधिकांश देशों में हिंदी समझी जाती है तथा हिंदी पर अनेक शोध कार्य भी चल रहे हैं। अर्थात् हिंदी की लोकप्रियता अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तो बढ़ रही है। यहाँ तक की अंतर्राष्ट्रीय हिंदी दिवस भी मनाया जाता है।

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है। शिशु जन्म के कुछ समय पश्चात अपनी सांकेतिक भाषा में अपनी इच्छा अपनी पालक को समझा देता है परन्तु ज्यों-ज्यों वह बढ़ता है अस्पष्ट शब्द में "माँ" बोलता है और इसी प्रकार अन्य शब्दों का उच्चारण करता हुआ पहले शब्द और फिर वाक्य भी उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाते हैं। स्वाभाविक है, जो हम उसको सिखायेंगें, जो व्यवहार में भाषा प्रयोग कर रहे हैं वही वह बोलता है। यहाँ तक कि स्थानीय बोली भी उसकी अभिव्यक्ति का अंग बन जाती है।

मैं, ये तो नहीं कहूंगा कि हमारा विकास नहीं हुआ परन्तु संभवतः विकास की इससे कई अधिक सीढियां हम चढ़ चुके होते, यदि एकमत से हमारी अपनी भाषा हिंदी होती। ये बात मैं, केवल किसी भावनावश नहीं कह रहा हूँ। यथार्थ तो ये है कि अपनी भाषा में जितनी शीघ्रता से हम सीख या समझ सकते हैं, उससे कई गुना अधिक समय दूसरी भाषा में सीखने में लगता है, जो भाषा हम जन्म के समय से सुन रहे हैं, सीख रहे हैं उससे भिन्न भाषा चाहे वह कोई भी हो उस भाषा के माध्यम से कुछ भी सीखने में समय अधिक लगेगा।





इस संदर्भ में यदि इच्छा शक्ति की बात की जाय तो वो कभी रही नहीं जिसका उदाहरण है संविधान निर्माण के समय अनुच्छेद 343 के अनुसार हिंदी को सरकारी कामकाज की भाषा और देवनागरी को लिपि तो घोषित कर दिया गया, परन्तु 15 वर्षों के लिए अंग्रेजी के प्रयोग की छूट दी गयी और 15 वर्ष पूर्ण होने पर भी हिंदी भारत के मस्तक की बिंदी नहीं बन सकी । परन्तु स्वाधीनता प्राप्ति के 78 वर्ष पश्चात भी हिंदी सम्मान नहीं प्राप्त कर सकी ।

आज भी ऐसा लगता है कि कोई सुधारक, भाषा वेत्ता हिंदी के विषय में अपनी आवाज उठाना भूल ही गया है । अतः कोई आवाज ही सुनाई नहीं देता। हमारे पास क्योंकि दृढ़ इच्छा शक्ति का अभाव है। अच्छा होगा कि हम हिंदी सीखने को अपना उत्तरदायित्व समझें। एक बहुत ही सुखद परिवर्तन जो हमारी हिंदी के उज्ज्वल भविष्य के लिए आशा की किरण के रूप में दिखाई देता है संचार तकनीक में विभिन्न हिंदी के विकल्प उपलब्ध होने का ऐसे विकल्पों की संख्या में वृद्धि। ऐसे लोग, जिनके हृदय में हिंदी के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार की भावना को सुअवसर प्रदान करता है साथ ही उनके प्रोत्साहन से आने वाली पीढ़ी पर भी कुछ प्रभाव पड़ेगा ।

मैं, अंत में यह स्पष्ट करना चाहूँगा कि मैं, स्वयं हिंदी बोलने-लिखने में गर्व का अनुभव करता हूँ तथा प्रोत्साहन देता हूँ । कहीं से भी कुछ ज्ञानवर्धन होता हो तो बहुत अच्छा है। अंग्रेजी का अध्ययन करता हूँ, आवश्यकता अनुसार प्रयोग भी करता हूँ, पर अपनी राष्ट्र भाषा की कीमत पर कताई नहीं ।

बहुत शानदार बात लिखी



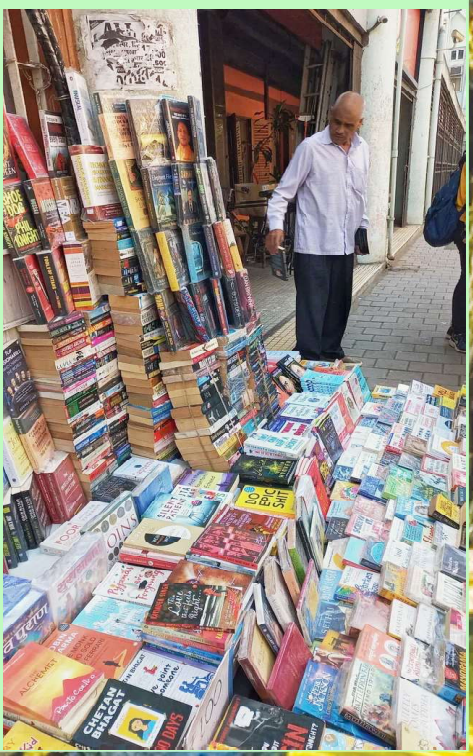
श्री शौर्य मिश्रा,
पुत्र - श्री विनोद कुमार, सहायक निदेशक
(हि.शि.यो., शिलांग)

गाँव में नीम के पेड़ कम हो रहे है,
घरों में कड़वाहट बढ़ती जा रही है ।

जुबान में मिठास कम हो रही है,
शरीर में शुगर बढ़ती जा रही है ।

किसी महापुरुष ने सच ही कहा था की जब किताबे सड़क किनारे रख कर बिकेगी और जूते काँच के शोरूम में तब समझ जाना कि लोगों को ज्ञान की नहीं जूते की जरूरत है ।





सपनों की उड़ान: संघर्ष से सफलता तक



श्री अमित कुमार वर्मन,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

तारों के बीच चमकता एक सितारा था,
आठ साल का वह बालक, अपनी किस्मत का सहारा था ।
मेहनत और जज्बे से भरा उसका सफर,
हर दिन की कड़ी मेहनत से उसने लिखा मुकद्दर ।

बारह घंटे की मेहनत, फिर पढ़ाई का समय,
कोई पैसा नहीं, पर हौसला बुलंद था हर दम ।
खाना बनाने को भी पैसा नहीं था पास,
पर सपनों की उड़ान में न था कोई हिचकिचाहट का आभास ।

किराये का घर, स्कूल की फीस का नहीं था बंदोबस्त,
पर माता-पिता के सहयोग से वह बना अव्वल व्यक्तित्व ।
उनकी प्रेरणा, उनका साथ था सबसे बड़ा बल,
इसी बल से उसने पाया सफलता का महल ।

आज वह है अधिकारी, समाज की सेवा का मन,
किसी और बच्चे को न झेलना पड़े वही कठिनाई का क्षण ।
उनके संघर्ष की कहानी अब प्रेरणा है हमारी,
हर बच्चे को मिले शिक्षा, यही है उसकी चाहत हमारी ।

सपनों की राह पर चलने की उसकी गाथा,
हर बच्चे के दिल में जगाएगी नई आशा ।
हिम्मत और मेहनत से हर मंजिल है पास,
उस बालक की कहानी, हमारे दिलों में खास ।



मन जीते जग जीते

श्रीमती रोज बेगम,
माँ - मुहम्मद जियाऊल हक,
हिंदी अधिकारी



मनुष्य एक मननशील प्राणी है । अपने मानसिक बल से वह असम्भव से असम्भव कार्य भी कर लेता है । अंग्रेजी का एक सुप्रसिद्ध कथन है कि "Where there is a will, there is a way" मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने का कार्य उसकी इच्छा शाक्ति अथवा मन ही सम्पन्न कराता है । मनुष्य जो भी उद्योग, निरन्तर उन्नति करने का प्रयास करता है, सब मन के बल पर ही निर्भर करता है । यदि मनुष्य का मन क्रियाशील नहीं रहता अथवा मन हार या मर जाता है तो उसके लिए संसार का समस्त आकर्षण तुच्छ अथवा अर्थहीन हो जाते है। उसे चारों ओर से निराशा घेर लेती है। वह जीवित होते हुए भी मरणवत् हो जाता है। यदि मनुष्य मानसिक रूप से निष्क्रिय हो जाता है तो वह कोई भी कार्य नहीं कर पाता ।

अपने आराध्य के प्रति आस्था मनुष्य के मानसिक बल में वृद्धि करती है । जब वह ईश्वर का नाम लेकर मन से कोई कार्य करता है तो कोई कारण नहीं कि उसे उस कार्य में सफलता न मिले । यह अवश्य हो सकता है कि उसे फल प्राप्ति के लिए संघर्षरत रहना पड़े किन्तु उसे सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है ।

इस परिवर्तनशील संसार में सुख और दुःख चक्र के समान घूमते रहते है । अतः जब दुःख के बाद सुख आता है तो दुःख से भी नहीं घबराना चाहिए। बुद्धिमान मनुष्य को जीवन के प्रति आशावन दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जिससे वह अपना और अपने राष्ट्र का कल्याण कर सके। हिम्मत हारने से कुछ बनता नहीं, अपितु बिगड़ता ही है ।

मनुष्य की मानसिक शक्ति उसकी इच्छा शक्ति पर निर्भर रहती है । जिस मनुष्य की इच्छा शक्ति जितनी बलवती होगी उसका मन भी उतना ही दृढ़ होगा । उदाहरण स्वरूप हम गाँधी जी को ले सकते है क्योंकि गाँधी जी में भी हमें यही इच्छा शक्ति दृष्टिगोचर होती है, जो वे चाहते थे वही होता था। यहाँ तक कि शत्रु भी उनके आगे नतमस्तक देखे गए। यही कारण है कि गाँधी जी साधारण मनुष्य से महान् थे । विघ्न-बाधायें सभी के मार्ग में रूकावट बन कर आती हैं, चाहे वह साधारण व्यक्ति हो या महान्, अन्तर केवल इतना है कि साधारण मनुष्य का मन विपत्तियों को देखकर जल्दी हार मान लेता है, जबकि प्रतिभाशाली व्यक्ति अपने मानसिक बल के आधार पर उन पर विजय प्राप्त करते हैं । विषम परिस्थितियाँ और उन पर दृढ़त पूर्वक विजय प्राप्त ही मनुष्य को महान बनाती है ।

आशावन मन मानव जीवन का संचार सूत्र है । आशा के सहारे मनुष्य बड़े-बड़े वीरतापूर्ण और साहसपूर्ण कार्य कर दिखाता है । यही आशा मानव को कर्म की प्रेरणा देती है इसलिए आशा को "आशा बलवती राजन्" कहा गया है । अर्थात् आशा बड़ी बलवान वस्तु है । आशावादी व्यक्ति कभी अकर्मण्य नहीं हो सकता । वह सदा कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी प्रयत्नशील रहता है ।

अतः स्पष्ट है कि जो व्यक्ति जीवन में सफल होना चाहता है तथा कुछ करना चाहता है, उस व्यक्ति को कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपना मन विचलित नहीं करना चाहिए । यदि वह अपने मन की संचलता को वश में कर सकेगा

तो उसका मनोबल भी दृढ़ बना रहेगा। सुदृढ़ मनोबल ही समस्त सफलताओं को प्राप्त करने का प्रमुख साधन है । जिस व्यक्ति का जीवन मानसिक संतापों से युक्त है वह कभी भी सफलता नहीं प्राप्त कर सकता । उदाहरण स्वरूप हम महाभारत के अर्जुन को ले सकते है, जिन्होंने अपने मन को वश में करने के पश्चात ही युद्ध में विजय प्राप्त की थी। इसीलिए कहा जाता है कि - "बुद्धिमान व्यक्ति सदा अपने मन का अनुसरण कर सफलता को प्राप्त करते हैं क्योंकि उन्होंने अपने मन को जीत लिया है।"

तितलियाँ



सुश्री बन्दरिशा पिंगरूप
बहन - श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप,
लेखापरीक्षक

देखो कितने सुन्दर है ये तितलियाँ
एक दूसरे से यह अनेक
अपने-अपने रंगों में यह चमकते
लाल, काला, पीला, नीला
यह है ईश्वर का निर्माण ।



अपने पंख फैलाते और उड़ते
यहा-वहा उड़ते फिरते
ऊपर आसमान तक जाते
कभी-कभी इन्सान पर बैठते
यह है ईश्वर की चित्रकारी ।

अपने प्यास, भूख, फूलो से मिलते
कितनी सुंदर है यह देखने में
इनको देखकर मन सुकून हो जाते
कितने अनेक और अलग है यह तितलियाँ
यह है ईश्वर का निर्माण ।



श्री अशोक कुमार, वरिष्ठ अनुवादक, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करते हुए ।



डॉ. जीन एस. दखार, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लेडी कीन कॉलेज, मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करती हुईं ।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करती हुईं ।



श्री कैल्विन हैरिस खारशिंग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए ।



श्री अहमद हसनुज्जमान चौधुरी, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए ।



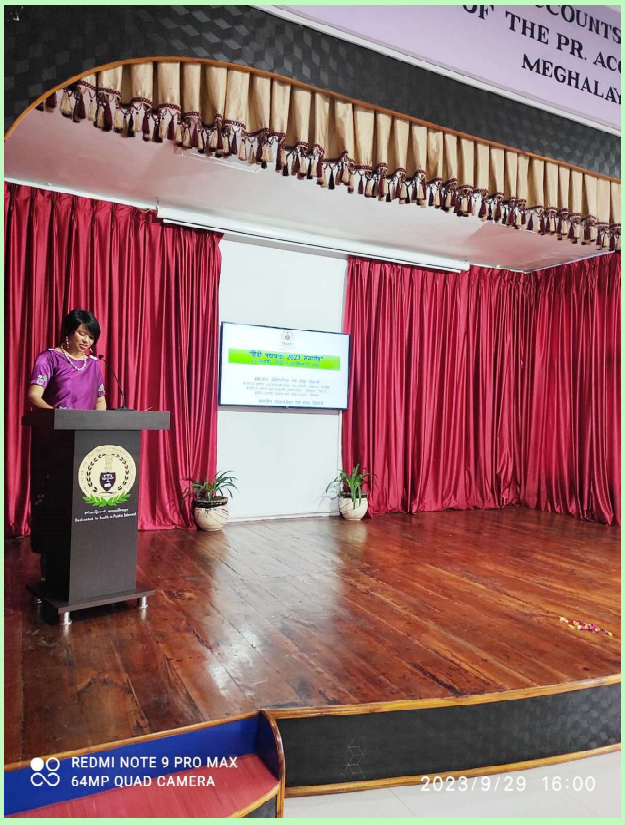
डॉ. डी. अनिश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए ।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर अभिभाषण देती हुई ।



श्री कैल्विन हैरिस खारशिंग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर वक्तव्य देते हुए ।



डॉ. जीन एस. दखार, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लेडी कीन कॉलेज, मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर संबोधित करती हुई ।



मुहम्मद जियाऊल हक, हिंदी अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर वक्तव्य देते हुए ।



डॉ. जीन एस. दखार, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लेडी कीन कॉलेज, मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर विभागीय राजभाषा रनिंग शील्ड प्राप्त करते हुए श्री रीतेश कुमार, स.ले.प.अ., ए.एम.जी.-II अनुभाग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग ।



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत करती हुई बच्ची ।



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करने की झलक ।



श्री कैल्विन एच. खारशिंग, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करने की झलक ।



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर विभागीय राजभाषा रनिंग शील्ड सहित कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के हिंदी स्टाफ ।



सागर विजय काळे, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए ।



हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के उपरांत मुख्य अतिथि सहित कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के समूह अधिकारी के साथ सामूहिक छायाचित्र की एक झलक ।





हिन्दी पखवाड़ा 2023 के समापन समारोह के उपरांत जलपान करते हुए मुख्य अतिथि सहित कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के समूह अधिकारी ।



दिनांक 08/03/2024 को सिलीगुड़ी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर मंचासीन केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री निशिथ प्रामाणिक, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, श्रीमती अंशुली आर्या एवं संयुक्त सचिव डॉ. (श्रीमती) मीनाक्षी जौली, अध्यक्ष, नराकास सिलीगुड़ी, श्री वीरेन्द्र सिंह, आदि ।



श्री निशिथ प्रामाणिक, केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री दिनांक 08/03/2024 को सिलीगुड़ी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए ।



श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय दिनांक 08/03/2024 को सिलीगुड़ी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर अभिभाषण देती हुई ।



दिनांक 08/03/2024 को सिलीगुड़ी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री श्री निशिथ प्रामाणिक के करकमलों द्वारा शील्ड एवं प्रमाण-पत्र प्रदान करने की एक झलक ।



दिनांक 08/03/2024 को सिलीगुड़ी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रो के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर कार्यक्रम का आनन्द लेते हुए माननीय गृह राज्य मंत्री एवं अन्य विशिष्ट अतिथिगणों की एक झलक ।



डॉ. मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव दिनांक 08/03/2024 को सिलीगुड़ी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर अभिभाषण देती हुई ।



मुहम्मद जियाऊल हक, हिंदी अधिकारी दिनांक 08/03/2024 को सिलीगुड़ी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में प्रतिभाग लेते हुए ।



श्री एस. सामिदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा गणतंत्र दिवस 2024 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



श्री कैल्विन हैरिस खारशिंग, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा गणतंत्र दिवस 2024 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



अहमद हसनुज्जमान चौधुरी, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा गणतंत्र दिवस 2024 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



गणतंत्र दिवस 2024 के अवसर पर लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के परिसर में झंडा फहराने के पश्चात राष्ट्रगान की एक झलक ।



श्री एस. सामिदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में देशभक्ति गीत गाने की एक झलक ।



स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में समूह गीत गाने की एक झलक ।



स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में स्टाफ के बच्चों द्वारा संगीत कुर्सी (म्यूजिकल चौयर) खेलने की एक झलक ।



श्री जहन के. सेलाटे, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में अभिभाषण देते हुए ।



स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में कार्मिकों के बच्चों द्वारा अभिभाषण सुनते हुए ।



श्री एस. सामिदुरै, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में पुरस्कार वितरण करते हुए ।



श्री अहमद हसनुज्जमान चौधुरी, उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2024 के अवसर पर क्षेत्रीय क्षमता निर्माण और ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में पुरस्कार वितरण करते हुए ।



दिनांक 14/09/2024 और 15/09/2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में हिंदी दिवस समारोह एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी दीप प्रज्ज्वलित करते हुए ।



दिनांक 14/09/2024 और 15/09/2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में हिंदी दिवस समारोह एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर उपस्थित अधिकारीगण एलं कर्मचारीगण की एक झलक ।





मुहम्मद जियाऊल हक, हिंदी अधिकारी दिनांक 14/09/2024 और 15/09/2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में हिंदी दिवस समारोह एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रतिभाग लेते हुए ।



सत्यमेव जयते

भारत सरकार / Govt. of India
गृह मंत्रालय / Ministry of Home Affairs
राजभाषा विभाग / Department of Official Language

सहभागिता प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री / श्रीमती / सुश्री **मुहम्मद जियाऊल हक** जिनकी पंजीकरण संख्या **HDS24ABRS04094** है , ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा भारत मंडपम ,नई दिल्ली मे 14-15 सितंबर 2024 को आयोजित हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सहभागिता की।

अनिल कुमार (Anil Kumar)
उप सचिव / Deputy Secretary
गृह मंत्रालय / Ministry of Home Affairs
भारत सरकार / Govt. of India

मुहम्मद जियाऊल हक, हिंदी अधिकारी, दिनांक 14/09/2024 और 15/09/2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में हिंदी दिवस समारोह एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में प्रतिभाग लेने के फलस्वरूप राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सहभागिता प्रमाण-पत्र जारी करने की एक झलक ।



श्री पी.आर. रिंग्ख्लेम, प्रधान महालेखाकार के सचिव कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, दिनांक 27/08/2024 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला के अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए ।



श्रीमती असित कमल, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, महानिदेशालय असम राइफल्स, शिलांग एवं संकाय विशेषज्ञ द्वारा दिनांक 27/08/2024 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अभ्यास कराते हुए ।



दिनांक 27/08/2024 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों का सामूहिक छायाचित्र ।



अध्यक्ष, नराकास, महानिदेशालय असम राइफल्स, शिलांग के करकमलों द्वारा वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में प्रशंसनीय कार्य करने के फलस्वरूप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलांग की राजभाषा शील्ड योजना के तहत दिनांक 01-02-2024 को आयोजित नराकास की द्वितीय अर्द्धवार्षिक बैठक में प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए श्री एस. सामिदुरै, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग ।



महानिदेशालय असम राइफल्स, शिलांग में दिनांक 01-02-2024 को आयोजित नराकास की द्वितीय अर्द्धवार्षिक बैठक में प्रतिभाग लेते हुए सदस्य कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।



क्रम संख्या .....02.....

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA

गृह मंत्रालय
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

महानिदेशालय असम राइफल्स
DIRECTORATE GENERAL ASSAM RIFLES

शिलांग–793010
SHILLONG – 793010

प्रमाणित किया जाता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का–1), शिलांग की राजभाषा शील्ड योजना के तहत कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा), शिलांग ने वर्ष ...2022-23.....के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में प्रशंसनीय कार्य किया है।

इस उपलब्धि के लिए उन्हें प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

प्रदीप सी नायर

महानिदेशक असम राइफल्स एवं
अध्यक्ष, नराकास (का–1), शिलांग

दिनांक : 27 जनवरी 2024



अध्यक्ष, नराकास, महानिदेशालय असम राइफल्स, शिलांग के करकमलों द्वारा वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में प्रशंसनीय कार्य करने के फलस्वरूप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलांग की राजभाषा शील्ड योजना के तहत दिनांक 27-06-2024 को आयोजित नराकास की प्रथम अर्द्धवार्षिक बैठक में प्रशस्ति पत्र प्राप्त करते हुए श्री एस. सामिदुरै, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग ।



महानिदेशालय असम राइफल्स, शिलांग में दिनांक 27-06-2024 को आयोजित नराकास की प्रथम अर्द्धवार्षिक बैठक में प्रतिभाग लेते हुए सदस्य कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।



क्रम संख्या 04

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
गृह मंत्रालय
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
महानिदेशालय असम राइफल्स
DIRECTORATE GENERAL ASSAM RIFLES
शिलांग–793010
SHILLONG -793010

प्रमाणित किया जाता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) शिलांग की राजभाषा शील्ड योजना के तहत कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग ने वर्ष 2023-2024 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में प्रशंसनीय कार्य किया है।

इस उपलब्धि के लिए उन्हें प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

दिनांक 18 जून 2024

महानिदेशालय असम राइफल्स Directorate General Assam Rifles Shillong - 10

की सी नायर
महानिदेशक असम राइफल्स
Director General Assam Rifles
एवं अध्यक्ष, नराकास, शिलांग
Chairman, TOLIC, Shillong



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग दिनांक 14/03/2024 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अभिभाषण देती हुई ।



श्री विशाल, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग दिनांक 14/03/2024 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर कविता पाठ करते हुए ।



अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर सांस्कृतिक गीत प्रस्तुत करते हुए अधिकारीगण ।



आई.ए. एण्ड ए.डी. द्वारा कोलकाता में दिनांक 7 फरवरी से 9 फरवरी 2024 तक आयोजित ईस्ट जोन फुटबॉल टूर्नामेंट 2023-2024 में कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग की फुटबॉल टीम प्रथम स्थान ।



श्रीमती गायत्री क्षेत्री, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग दिनांक 14/03/2024 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अभिभाषण देती हुई ।



डॉ. डी. अनिश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा दिनांक 14/03/2024 को सिविल ऑडिट खेल और सांस्कृतिक क्लब में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संदीपन चौधुरी, सहायक पर्यवेक्षक ।



दिनांक 23/07/2024 को श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग की विदाई समारोह के अवसर पर ली गई सामूहिक छायाचित्र ।

भविष्य में वाहनों के इंधन का स्थानांतरण : हाइड्रोजन ईंधन और इलेक्ट्रिक वाहनों की दिशा



श्री एक्वारियस मैथ्यू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रस्तावना –

विश्व भर में, ऊर्जा संकट और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए नए और स्थायी इंधन विकल्पों की तलाश जारी है । पारंपरिक इंधन जैसे पेट्रोल और डीजल से उत्पन्न प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन के खतरे ने हाइड्रोजन ईंधन और इलेक्ट्रिक वाहनों के विकास को गति दी है । ये प्रौद्योगिकियाँ पर्यावरणीय संतुलन को बनाए रखते हुए ऊर्जा की मांग को पूरा करने की दिशा में एक बड़ा कदम हैं। इस लेख में हम इन तकनीकों की गहन पड़ताल करेंगे, उनके व्यावहारिकता, लागत, और प्रदूषण पर उनके प्रभाव को समझने के साथ-साथ उनके कच्चे माल और कार्यान्वयन के पहलुओं पर भी चर्चा करेंगे ।

1. हाइड्रोजन ईंधन :-

प्रौद्योगिकी विकास :- हाइड्रोजन ईंधन का विचार नया नहीं है, लेकिन हाल के वर्षों में इसमें उल्लेखनीय प्रगति हुई है । हाइड्रोजन फ्यूल सेल वाहन (FCV) ऊर्जा उत्पादन के लिए हाइड्रोजन और ऑक्सीजन का उपयोग करते हैं, जिससे केवल पानी और बिजली उत्पन्न होती है । इस प्रक्रिया में, हाइड्रोजन फ्यूल सेल के माध्यम से हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को मिलाकर विद्युत रासायनिक प्रतिक्रिया होती है ।

कच्चा माल :- हाइड्रोजन के उत्पादन के लिए मुख्य रूप से प्राकृतिक गैस, पानी, और बायोमास का उपयोग किया जाता है । हाइड्रोजन उत्पादन के लिए पानी के इलेक्ट्रोलिसिस की विधि सबसे स्वच्छ मानी जाती है, लेकिन इसकी लागत अधिक होती है । सस्ती और अधिक सुलभ प्राकृतिक गैस के माध्यम से हाइड्रोजन का उत्पादन करने के लिए सुधार प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है, लेकिन यह प्रक्रिया कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन उत्पन्न करती है ।

प्रासंगिकता :- हाइड्रोजन ईंधन को एक स्वच्छ और हरित विकल्प के रूप में देखा जा रहा है । यह न केवल पेट्रोल और डीजल की तुलना में अधिक ऊर्जा दक्ष है, बल्कि इसकी उच्च ऊर्जा घनत्व भी इसे लंबी दूरी की यात्रा के लिए आदर्श बनाती है । हालांकि, इसके व्यापक उपयोग के लिए कई चुनौतियों का समाधान आवश्यक है, जैसे हाइड्रोजन उत्पादन की उच्च लागत, भंडारण, और वितरण नेटवर्क का विकास।

मूल्य :- वर्तमान में, हाइड्रोजन ईंधन की उत्पादन लागत अपेक्षाकृत अधिक है, लेकिन जैसे-जैसे तकनीक में सुधार हो रहा है, इसके उत्पादन और वितरण की लागत में भी कमी आ रही है । इसके अलावा, फ्यूल सेल तकनीक का निर्माण महंगा है, लेकिन बढ़ती मांग और उत्पादन की मात्रा के साथ इसकी कीमत में भी कमी आएगी ।

कार्यान्वयन :- हाइड्रोजन ईंधन के कार्यान्वयन में भंडारण और परिवहन एक बड़ी चुनौती है । हाइड्रोजन को सुरक्षित और कुशलता से स्टोर और ट्रांसपोर्ट करने के लिए उच्च दबाव टैंकों और क्रायोजेनिक टैंकों का उपयोग किया जाता है । सरकारों और कंपनियों को वितरण नेटवर्क के विस्तार में निवेश करना होगा ताकि हाइड्रोजन ईंधन वाहनों को व्यापक रूप से अपनाया जा सके।



पर्यावरणीय प्रभाव :- हाइड्रोजन वाहनों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उनका उत्सर्जन केवल पानी होता है, जिससे ये पर्यावरण के लिए अत्यंत हितकारी हैं । इसके अलावा, यदि हाइड्रोजन को नवीकरणीय स्रोतों से उत्पन्न किया जाता है, तो यह पूरी प्रक्रिया को कार्बन मुक्त बना देता है ।

2. इलेक्ट्रिक वाहन :-

प्रौद्योगिकी विकास :- इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) ने पिछले दशक में काफी प्रगति की है । ये वाहन बैटरी से चलने वाले मोटर्स का उपयोग करते हैं और चार्जिंग स्टेशनों पर चार्ज किए जा सकते हैं। बैटरी तकनीक में सुधार और चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर के विस्तार ने इन्हें अधिक लोकप्रिय और व्यावहारिक बना दिया है ।

कच्चा माल :- इलेक्ट्रिक वाहनों की बैटरी निर्माण के लिए मुख्य कच्चे माल में लिथियम, कोबाल्ट, निकल, और ग्रेफाइट शामिल हैं । इन खनिजों का खनन और प्रसंस्करण पर्यावरणीय और सामाजिक चुनौतियों के साथ जुड़ा हुआ है । कच्चे माल की उपलब्धता और लागत इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग के लिए एक महत्वपूर्ण कारक है ।

प्रासंगिकता :- इलेक्ट्रिक वाहन शहरी क्षेत्रों में विशेष रूप से लाभकारी हैं, जहां प्रदूषण एक बड़ी समस्या है । इनकी त्वरित गति, शांत संचालन, और न्यूनतम रखरखाव की आवश्यकता ने इन्हें उपभोक्ताओं के बीच लोकप्रिय बना दिया है । हालांकि, बैटरी की सीमित जीवन अवधि और चार्जिंग की समय सीमा जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं।

मूल्य :- इलेक्ट्रिक वाहनों की प्रारंभिक खरीद लागत अभी भी पारंपरिक वाहनों की तुलना में अधिक है । हालांकि, सरकारें सब्सिडी और टैक्स छूट के माध्यम से इसे प्रोत्साहित कर रही हैं । दीर्घकालिक दृष्टि से, इन वाहनों की संचालन लागत कम है क्योंकि बिजली की कीमतें तेल के मुकाबले कम स्थिर होती हैं और रखरखाव की आवश्यकता भी कम होती है ।

कार्यान्वयन :- इलेक्ट्रिक वाहनों के व्यापक उपयोग के लिए चार्जिंग इंफ्रास्ट्रक्चर का विस्तार महत्वपूर्ण है। तेजी से चार्जिंग स्टेशनों का निर्माण और बैटरी स्वैपिंग जैसी नई तकनीकों का विकास इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग को सरल बना सकता है । इसके अलावा, स्मार्ट ग्रिड तकनीकें बैटरी चार्जिंग को अधिक कुशल और पर्यावरणीय रूप से स्थायी बना सकती हैं ।

पर्यावरणीय प्रभाव :- इलेक्ट्रिक वाहन पारंपरिक वाहनों की तुलना में बहुत कम या बिना प्रदूषण के चलते हैं । अगर बिजली उत्पादन नवीकरणीय स्रोतों से होता है, तो यह कार्बन उत्सर्जन को और भी कम कर सकता है । यह इन वाहनों को दीर्घकालिक पर्यावरणीय समाधान के रूप में स्थापित करता है ।

3. मूल्य और प्रदूषण :-

प्रदूषित पदार्थ का न्यूनतमकरण :- पारंपरिक ईंधन पर निर्भरता से छुटकारा पाने का सबसे बड़ा फायदा प्रदूषण में कमी है । हाइड्रोजन और इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग से वायु गुणवत्ता में सुधार होता है, जो मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए लाभकारी है ।

कीमत पर प्रभाव :- हालांकि हाइड्रोजन और इलेक्ट्रिक वाहनों की शुरुआती लागत अधिक होती है, लेकिन संचालन और रखरखाव की कम लागत इसे दीर्घकालिक रूप से लाभकारी बनाती है । सरकार की नीतियों और सब्सिडियों से इनकी लागत में कमी लाने में मदद मिल रही है ।

4. भविष्य की संभावनाएं :-

संचार का विकास :- भविष्य में हाइड्रोजन और इलेक्ट्रिक वाहनों के व्यापक उपयोग की संभावना है । इससे तेल पर निर्भरता कम होगी और पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा । तकनीकी उन्नति और नीतिगत समर्थन से इन वाहनों के

उपयोग को बढ़ावा मिलेगा ।

सरकारी नीति और समर्थन :- कई देशों में सरकारें इन तकनीकों को प्रोत्साहित कर रही हैं, जिससे इनका विकास और अधिक तेजी से हो सके । सब्सिडी, कर छूट, और चार्जिंग नेटवर्क का विस्तार इसे और भी अधिक लोकप्रिय बना सकता है ।

निष्कर्ष :- हाइड्रोजन और इलेक्ट्रिक वाहन पारंपरिक इंधनों का एक प्रभावी और पर्यावरणीय विकल्प प्रस्तुत करते हैं । इनकी स्वच्छ ऊर्जा और दीर्घकालिक लागत में बचत इन्हें भविष्य की परिवहन प्रणाली का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना रही है । तकनीकी विकास और सरकारी समर्थन से यह परिवर्तन और भी तेजी से हो सकता है, जिससे हम एक स्थायी और प्रदूषण मुक्त भविष्य की ओर बढ़ सकते हैं ।

इस दिशा में सफल होने के लिए, हमें इन्फ्रास्ट्रक्चर, तकनीकी नवाचार, और उपभोक्ता जागरूकता को बढ़ावा देने की आवश्यकता है । जब तक ये चुनौतियाँ हल नहीं होतीं, तब तक यह संक्रमण धीमा हो सकता है, लेकिन दीर्घकालिक दृष्टिकोण से, हाइड्रोजन और इलेक्ट्रिक वाहन ही भविष्य हैं। कच्चे माल की उपलब्धता, लागत और पर्यावरणीय प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करके, हम इन नई तकनीकों के विकास और कार्यान्वयन को अधिक प्रभावी बना सकते हैं ।





क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया



श्री विशाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मे रे अन्दर का मासूम सा बच्चा खो गया,
ना जाने, क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो अठ्ठनी की टोपी, वो पारले का बिस्कीट,
वो बर्फ की चुसकी, वो स्वाद खो गया,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो बारीस में भीगना, वो फर्स में फिसलना,
वो कागज की कश्ती मैं, सब भूल गया ।
क्यू बेवजह में बड़ा हो गया ।

वो चिड़िया उड़ का खेल, वो बच्चो की रेल,
वो लुक्का-छुप्पी, वो गिल्ली डंडा, सब छुट गया,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो पिताजी की मार, वो माँ का बचाना,
वो दादी का दुलार, ना जाने कहाँ खो गया,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो छत पे सोना, वो तारों को गिनना,
वो चाँद को देखना, सब धुमिल हो गया,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो गर्मी की छुट्टी वो नानी का घर,
वो तालाब में नहाना, वो गर्मी का सफर,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो होमवर्क का ना करना, वो पेट दर्द का बहाना,
वो स्कूल में ना जाना, अहफीस में सब छुट गया,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

शक्तिमान का आना, पड़ोस वाले घर में जाना,
दोस्तो की मंडली सजना, सब छीन गया,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो दिवाली की मिठाईया, वो ईद की सैवैइया,
वो होली की गुजिया, अब वो स्वाद कहा,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो भरी ग्रुप में घर से निकलना, वो मिट्टी में खेलना,
वो तीतली को पकड़ना, सब छुट गया,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो चंद सिक्को की अमीरी, वो गुल्लक के पैसे,
जिससे खरीदनी थी दुनिया, आज खुद निलाम हो गया,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

माँ के हाथ का खाना, वो गाजर का हलवा,
वो दूध की खीर, वो खीर पे लड़ना-झंगड़ना,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो आधी छुट्टी के ठंड़े-पराठे, वो क्लास में आचार की खुशबू,
वो जल्दी से खाना, वो खेलने निकलना, बहुत पीछे छुट गया,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

वो दिवाली के पटाखे, वो तीजों की पतंग,
वो होली के रंग, वो याद खो गया,
क्यू बेवजह मैं, बड़ा हो गया ।

बेफिक्री की हिफाजत में फिर से खो जाऊ,
कुछ ऐसा करिशमा हो कि फिर से बच्चा हो जाऊ ।

भारत में नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट और इसकी प्रभावकारिता



श्री रितेश आनन्द
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रस्तावना –

भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक का कार्य देश के विभिन्न राज्यों और विभागों की वित्तीय गतिविधियों की जांच और मूल्यांकन करना है । सी.ए.जी. की रिपोर्टें सरकारी कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण होती हैं । हालांकि, इन रिपोर्टों का विधानसभा और संसद में प्रस्तुत होने के बाद प्रभावी परिणाम सामने नहीं आते हैं । यह समस्या मुख्य रूप से सी.ए.जी. की रिपोर्टों पर कार्रवाई के लिए एक विशेष न्यायालय की अनुपस्थिति के कारण उत्पन्न होती है । इस लेख में हम सी.ए.जी. की रिपोर्टों की प्रक्रिया, उनकी प्रभावशीलता, भ्रष्टाचार की वर्तमान स्थिति, और सुधार के लिए आवश्यक संवैधानिक प्रावधानों पर विचार करेंगे ।

1. सी.ए.जी. की रिपोर्ट बनाने की प्रक्रिया : –

सी.ए.जी. का कार्यक्षेत्र :– सी.ए.जी. भारत सरकार के सर्वोच्च अह्डिटर होते हैं, जिनका कार्य केंद्र और राज्य सरकारों के वित्तीय लेन-देन की जांच करना है । यह अह्डिट प्रक्रिया सरकारी विभागों, सार्वजनिक उपक्रमों, और अन्य सरकारी संस्थाओं की वित्तीय गतिविधियों पर केंद्रित होती है । भारतीय संविधान के अनुच्छेद 148 से 151 के तहत सी.ए.जी. को नियुक्त किया जाता है, और उनके अधिकार और कर्तव्य तय किए जाते हैं ।

रिपोर्ट तैयार करने की प्रक्रिया :– सी.ए.जी. की रिपोर्ट तैयार करने की प्रक्रिया में कई चरण होते हैं । सबसे पहले, अह्डिटर संबंधित विभागों और परियोजनाओं की वित्तीय रिपोर्टों का अध्ययन करते हैं । इसके बाद, वे इन दस्तावेजों की सत्यता की जांच करते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि वित्तीय लेन-देन निर्धारित नियमों के अनुसार हैं या नहीं । इसके बाद, सी.ए.जी. अपनी रिपोर्ट तैयार करते हैं, जिसमें किसी भी वित्तीय अनियमितता या अपव्यय की जानकारी शामिल होती है।

ऑडिटरों की मेहनत :– सी.ए.जी. की रिपोर्ट तैयार करने में अह्डिटरों को काफी मेहनत करनी पड़ती है । उन्हें विस्तृत आंकड़ों का विश्लेषण करना होता है और हर वित्तीय गतिविधि की गहराई से जांच करनी होती है । इस प्रक्रिया में अह्डिटरों को वित्तीय विशेषज्ञता और गहन ध्यान की आवश्यकता होती है ।

2. रिपोर्टों का प्रभाव और समस्याएं :–

विधानसभा और संसद में प्रस्तुतिकरण :– सी.ए.जी. की रिपोर्टें विधानसभा और संसद में प्रस्तुत की जाती हैं, जहाँ इनका विश्लेषण और चर्चा की जाती है । हालांकि, इन रिपोर्टों पर कार्रवाई की प्रक्रिया में कई समस्याएँ हैं । संसद में रिपोर्टें प्रस्तुत होने के बाद, उन्हें सार्वजनिक लेखा समिति (पी.ए.सी.) और उपभोक्ता मामले समिति (सी.ओ.पी.यू.) को भेजा जाता



है । ये समितियाँ रिपोर्ट की जांच करती हैं और सरकार को सिफारिशें देती हैं ।

प्रभावी परिणामों की कमी :- अक्सर देखा जाता है कि सी.ए.जी. की रिपोर्टों में उठाए गए मुद्दों पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं होती । इन रिपोर्टों का प्रभाव सरकार की वित्तीय कार्यप्रणाली में सुधार के रूप में दिखाई नहीं देता। यह मुख्य रूप से इसलिए होता है क्योंकि इन रिपोर्टों पर कार्रवाई के लिए कोई विशेष न्यायालय या कानूनी प्रावधान नहीं है । वर्तमान व्यवस्था में, पी.ए.सी. और सी.ओ.पी.यू. की सिफारिशें बाध्यकारी नहीं होती हैं, जिससे कार्रवाई की प्रक्रिया धीमी और अप्रभावी हो जाती है ।

पी.ए.सी. और सी.ओ.पी.यू. की सीमाएँ :- वर्तमान में, सी.ए.जी. की रिपोर्टों पर कार्रवाई के लिए सार्वजनिक लेखा समिति (पी.ए.सी.) और उपभोक्ता मामले समिति (सी.ओ.पी.यू.) का गठन किया गया है । हालांकि, ये समितियाँ केवल सिफारिशें ही कर सकती हैं और इनके पास कार्यान्वयन की कोई शक्ति नहीं होती । यह स्थिति रिपोर्टों के प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा डालती है ।

3. भारत में भ्रष्टाचार की वर्तमान स्थिति :-

भ्रष्टाचार के कारण और प्रभाव :- भारत में भ्रष्टाचार एक गंभीर समस्या है, जो सरकारी कार्यप्रणाली और विकास की प्रक्रिया को बाधित करता है । भ्रष्टाचार के कारण सरकार की नीतियाँ और योजनाएँ प्रभावी रूप से लागू नहीं हो पातीं, जिससे देश के संसाधनों का दुरुपयोग होता है ।

सी.ए.जी. की भूमिका :- सी.ए.जी. की रिपोर्टें भ्रष्टाचार के मामलों को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं । ये रिपोर्टें वित्तीय अनियमितताओं और अपव्यय को सामने लाती हैं, जिससे भ्रष्टाचार के मामलों की जांच की जा सकती है । हालांकि, जब तक इन रिपोर्टों पर ठोस कार्रवाई नहीं होती, तब तक भ्रष्टाचार की समस्या का समाधान नहीं हो सकता ।

संवैधानिक प्रावधान :- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 148 से 151 तक सी.ए.जी. की भूमिका और अधिकारों का उल्लेख किया गया है । हालांकि, सी.ए.जी. की रिपोर्टों पर कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए संविधान में विशेष न्यायालय की स्थापना की आवश्यकता है ।

4. समस्याओं का समाधान और लाभ :-

विशेष न्यायालय की आवश्यकता :- सी.ए.जी. की रिपोर्टों पर प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए एक विशेष न्यायालय की स्थापना की जानी चाहिए । यह न्यायालय सी.ए.जी. की रिपोर्टों में उठाए गए मुद्दों पर सुनवाई करेगा और उचित कार्रवाई करेगा । यह प्रक्रिया सी.बी.आई. अदालतों की तरह हो सकती है, जहाँ विशेष रूप से वित्तीय अनियमितताओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है ।

संवैधानिक प्रावधान की आवश्यकता :- सी.ए.जी. की रिपोर्टों पर कार्रवाई के लिए एक विशेष न्यायालय के गठन के लिए संसद में एक संवैधानिक प्रावधान की आवश्यकता है । यह प्रावधान न्यायालय को सी.ए.जी. की रिपोर्टों के आधार पर निर्णय लेने और कार्रवाई करने की शक्ति प्रदान करेगा ।

संभावित लाभ :-

विशेष न्यायालय की स्थापना से कई लाभ हो सकते हैं :-

1. **पारदर्शिता और जवाबदेही में सुधार :** सी.ए.जी. की रिपोर्टों पर ठोस कार्रवाई से सरकार की वित्तीय कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ेगी ।

2. **भ्रष्टाचार में कमी :** रिपोर्टों में उल्लिखित अनियमितताओं पर कार्रवाई से भ्रष्टाचार में कमी आएगी और सरकारी निधियों का सही उपयोग सुनिश्चित होगा ।

3. **जनता का विश्वास बढ़ेगा :** सरकारी कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ने से जनता का सरकार पर विश्वास बढ़ेगा ।

4. **आर्थिक सुधार :** वित्तीय अनियमितताओं पर कार्रवाई से देश की अर्थव्यवस्था में सुधार होगा और सरकारी निधियों का सही उपयोग सुनिश्चित होगा ।

निष्कर्ष :- भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक (सी.ए.जी.) की रिपोर्टें देश के वित्तीय प्रबंधन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण साधन हैं । हालांकि, इन रिपोर्टों का प्रभावी उपयोग तभी हो सकता है जब इन पर ठोस कार्रवाई की जाए । इसके लिए विशेष न्यायालय की स्थापना और संवैधानिक प्रावधान आवश्यक हैं । इस दिशा में सुधार से भारत की अर्थव्यवस्था और सरकारी कार्यप्रणाली में सकारात्मक बदलाव आ सकते हैं, जिससे देश के विकास में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा ।

सी.ए.जी. की रिपोर्टों के आधार पर कार्रवाई सुनिश्चित करने के लिए विशेष न्यायालय की स्थापना से न केवल भ्रष्टाचार में कमी आएगी बल्कि यह सरकार की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और जवाबदेही को भी बढ़ावा देगा। यह सुधार देश के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और भारत को एक स्वच्छ और पारदर्शी शासन प्रणाली की दिशा में आगे बढ़ाएगा ।

(यह लेखक की निजी राय है, सी.ए.जी. के कर्मचारी या विभाग के रूप में नहीं ।)



आम आदमी की जिन्दगी : संघर्ष और सुकून की कहानी

श्री सुमित कुमार वर्मन,
भाई - श्री अमित कुमार वर्मन,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



सूरज की पहली किरण से शुरू होती है दिन की कहानी,
आम आदमी की रोजमर्रा की यही है रवानी ।
नहाकर, सजधज कर, निकलता है वो काम पर,
ख्वाबों की गठरी बांधकर, हो जाता है सवार ।

बस या ट्रेन की भीड़ में, खो जाता है कहीं,
अपने हिस्से का संघर्ष, रोज करता है वहीं ।
अहफिस की मेज पर, कागजों का अंबार,
कभी मुस्कान, कभी तनाव, यही है रोज का व्यापार ।

दोपहर की थकान में, लंच का समय आता है,
थोड़ी राहत, थोड़ी बात, फिर से काम में लग जाता है ।
शाम होते ही, लौटता है वो घर की ओर,
परिवार की ममता, सुकून भरे ठौर ।

बच्चों की हंसी, पत्नी का साथ,
थोड़ी सी बातें, फिर नींद का रथ ।
रोज के इस चक्र में, कभी खुशी, कभी दर्द,
आम आदमी की जिंदगी, यूं ही बुनती है अपनी सर्द ।

साधारण से जीवन की ये धारा,
हर दिन एक नई उम्मीद का इशारा,
हर छोटी चीज में खुशियाँ ढूँढता,
साधारण आदमी की यही दास्ताँ ।



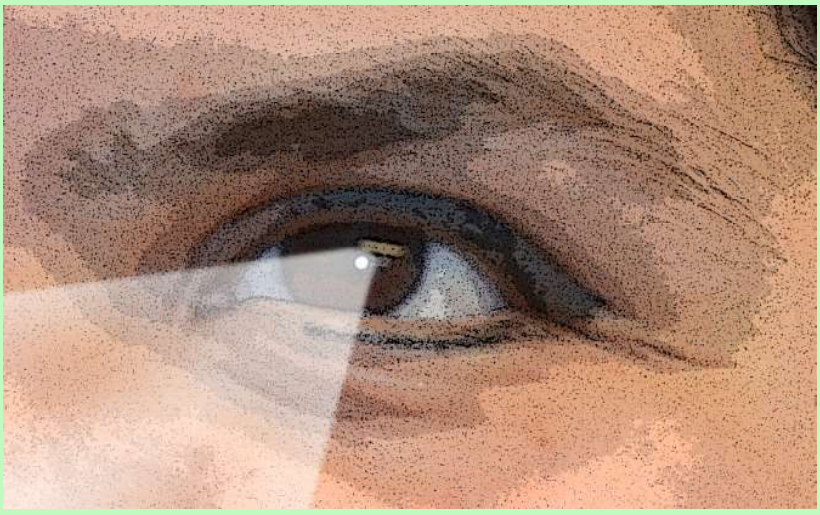
रोशनी अंधे की



श्रीमती मुमताज बेगम
पत्नी - मुहम्मद जियाऊल हक
हिंदी अधिकारी

पुराने जमाने की बात है । एक राजा ने दूसरे राजा के पास एक पत्र और सुरमें की एक छोटी सी डिबिया भेजी । पत्र में लिखा था जो सुरमा भिजवा रहा हूँ, वह अत्यन्त मूल्यवान है । इसे लगाने से अंधापन दूर हो जाता है । राजा सोच में पड़ गया । वह समझ नहीं पा रहा था कि इसे किस-किस को दें । उसके राज्य में नेत्रहीनों की संख्या अच्छी-खासी थी, पर सुरमें की मात्रा बस इतनी थी जिससे दो आँखों की रोशनी लौट सकें।

राजा इसे अपने किसी अत्यन्त प्रिय व्यक्ति को देना चाहता था । तभी राजा को अचानक अपने एक वृद्ध मंत्री की स्मृति हो आई । वह मंत्री बहुत ही बुद्धिमान था, मगर आँखों की रोशनी चले जाने के कारण उसने राजकीय कामकाज से छुट्टी ले ली थी और घर पर ही रहता था । राजा ने सोचा कि अगर उसकी आँखों की ज्योति वापिस आ गई तो उसे उस योग्य मंत्री की सेवाएँ फिरसे मिलने लगेगी । राजा ने मंत्री को बुलावा भेजा और उसे सुरमें की डिबिया देते हुए कहा, "इस सुरमें को आँखों में डालो, आप पुनः देखने लग जायेंगे । ध्यान रहे यह केवल दो आँखों के लिए है ।" मंत्री ने एक आँख में सुरमा डाला और उसकी रोशनी आ गई । मंत्री को उस आँख से सबकुछ दिखने लगा । फिर उसने बचा-खुचा सुरमा अपनी जीभ पर डाल लिया ।



यह देख कर राजा चकित रह गया । उसने मंत्री से पूछा - "यह आपने क्या किया ? अब तो आपकी एक ही आँख में रोशनी आ पाएगी । लोग आपको काना कहेंगे" इस पर मंत्री ने जवाब दिया - "राजन, चिंता न करें । मैं काना नहीं रहूँगा । मैं आँख वाला बनकर हजारों नेत्रहीनों को रोशनी दूँगा । मैंने चख कर यह जान लिया कि सुरमा किस चीज से बना है । मैं अब स्वयं सुरमा बनाकर नेत्रहीनों को बाटूँगा ।"

राजा ने मंत्री को गले लगा लिया और कहा, "यह हमारा सौभाग्य है कि मुझे आप जैसा मंत्री मिला । अगर हर राज्य के मंत्री आप जैसा हो जाएं तो किसी को कोई दुःख नहीं होगा ।"

प्यारे बच्चे

श्री जॉनीवनडोर मरबनियांग
भाई - श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप,
लेखापरीक्षक

कितने प्यारे है, सब बच्चे
अपने धुन में है ये पक्के
शरारती और बदमाशी करते
फिर भी कितने प्यारे है ।

कभी-कभी इनकी बोली न समझते
उनकी छोटी पैर और हाथ
अपने दुनिया में यह खुश रहते
कितने प्यारे है सब बच्चे ।

उच्छल कूद करते रहते
यहा-वहा खिलौने फैलाते
कभी न थकले खेलने में
फिर भी कितने प्यारे है ।

कितने मासूम और सरलमति
दुनिया की कुछ न हो परवाह
इनकी हर्कत मुस्कराहट लाते
कितने प्यारे है सब बच्चे ।



पर्यावरण



श्री केरिओनाल्ड पिंगरूप
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

दुनिया बहुत ही सुन्दर और सांत्वना है अगर आप उन्हें प्यार करते है तो । पहले ईश्वर को धन्यवान देना चाहता हूँ कि उन्होंने कितनी सुन्दर दुनिया बनाया है । इंसान, जानवर, पेड़-पौधे आदि साथ-साथ मौजूद रहते है । यह हरा पेड़, अनेक फूल, नीला आकाश, कितने सुन्दर ईश्वर ने बनाए है । परन्तु इंसानो के कारण अभी कितने उदासीन है । पेड़ काटते, कचरा यहा-वहा फैलाते, नापक करते और बहुत कुछ, यह सब पर्यावरण के लिए प्रदूषण है । हमारी जिम्मेदारी, पर्यावरण को साफ रखना लेकिन हमारे इन हरकतों से कितना ज्यादा गन्दगी फैले हुए है । हमारा काम है पर्यावरण की मदद करना लेकिन हम सब उन्हें धीरे-धीरे नष्ट कर रहे है।

अंत में यह लिखना चाहता हूँ कि, पर्यावरण से हममें सांत्वना, सुकून, मिलते है, और इसके कारण हमें पर्यावरण का देख-भाल करना है । कचरे को न फैलाए, पुनः उपयोग करे और पुनः चालित करे ।

अनुशासन की राह



श्री यश नायक,
पुत्र - श्री रितेश आनंद,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्यारे बच्चे, सुनो कहानी,
जीवन में लानी है सच्ची रवानी ।
सुबह उठो सूरज के साथ,
माता-पिता का लो आशीर्वाद ।

साफ-सुथरे कपड़े पहन,
स्कूल में कदम बढ़ाओ नयन ।
समय का मान रखो प्यारे,
हर काम करो सच्चे धारे ।

माता-पिता का कहना मानो,
उनके संग हर पल रहो ठानो ।
उनकी सेवा धर्म तुम्हारा,
उनसे ही मिलेगी सुख की धारा ।

बड़ों का आदर सबसे पहले,
उनके अनुभव ही जीवन खेले ।
हर दिन का नियम बनाओ,
आलस्य को दूर भगाओ ।

गुरु का मान, गुरु की सीख,
हर पाठ को करो दिल से ठीक ।
शिक्षा का अर्थ समझो सच्चा,
हर कदम पर मिलोगे अच्छा ।

समय का मोल समझो प्यारे,
जो बीते, न लौटे वो सारे ।
खेलो, कूदो, दिल बहलाओ,
पर मेहनत से न दूर जाओ ।

मित्रों संग प्यार बढ़ाओ,
सही राह पर सदा चलाओ ।

भोजन में हो संतुलन,
स्वास्थ्य का रखो बचपन ।

रात को सोने से पहले,
ध्यान करो प्रभु का मेले ।
बड़े सपने देखो, मेहनत से जियो,
अनुशासन से जीवन में मिठास घोलो ।

हर दिन को उत्सव बनाओ,
अनुशासन से जीवन सजाओ ।
मेहनत, प्रेम, और संस्कार,
जीवन में लाओ उजियार ।

छोटी बातें, बड़ी राहें,
सफलता की ये हैं बाहें ।
जो इन्हें अपनाए सच्चाई से,
उसका नाम हो सबसे न्यारा ।

बन जाओ वो चमकता तारा,
जो सबसे अलग और प्यारा ।
माता-पिता का नाम ऊँचा करो,
अनुशासन से जीवन को संवारो ।





शिक्षक



श्री चिराग राजपूत,
पुत्र-श्री राजेश कमल राजपूत,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जीवन में जो राह दिखाए,
सही तरह चलना सिखाए ।
माता पिता से पहले आता,
जीवन में सदा आदर पाता ।

सबको मान प्रतिष्ठ जिससे,
सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे ।
कभी रहा न दूर मैं जिससे,
वह मेरा पथदर्शक है जो ।
मेरे मन को भाता,
वह मेरा शिक्षक कहध्लाता ।

कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में दबी रहे ये इच्छा,
काश में उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता ।



कहानी हसीन होनी चाहिए

सुश्री दिया राजपूत,
पुत्री-श्री राजेश कमल राजपूत,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



किरदार चाहे जो भी हो
कहानी हसीन होनी चाहिए...
दिल में अच्छाई और
आंखों में प्यार होना चाहिए...

मायुसी में क्या रखा है
जिदंगी तो गुलजार होनी चाहिए...
सजते तो सभी है आजकल
पर उसमें थोड़ी सादगी की मिलावट
भी होनी चाहिए...
यूं तो सक सबके जिंदगी का सफर
आसन नहीं होता
जिंदगी जीने के लिए खुशमिजाज
होना चाहिए...

मिठास होठों पर नहीं
दिल में होनी चाहिए...
लोग चाहे जैसे भी बर्ताव करें
पर अपके बर्ताव में संस्कार होने चाहिए...

स्वार्थ से भरी इस दूनिया में
थोड़ा निस्वार्थ भी होना चाहिए...
किरदार चाहे जो भी हो
कहानी हसीन होनी चाहिए...

जरा सोच समझकर



श्रीमती रेखा राजपूत,
पत्नी-श्री राजेश कमल राजपूत,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

लोग एक-दूसरे से कहते है, जरा सोच-समझकर काम करना । यह तो अब एक मुहावरा बन गया है । इसे बार-बार सुनने पर ऐसा लगता है कि सेचना और समझना एक ही मानसिक क्रिया के दो पहलू हैं । हम सोचने की क्रिया को भी लपेट लेते हैं लेकिन सयानों से पूछें, तो वे कहते है, ये दो बिल्कुल अलग बाते हैं । इन दोनों में इतना ही फर्क है जितना कि दिखना और अंधेरे में टटोलने में होता है । ओशो ने इन दोनो में बड़ा फर्क बताया है । वह कहते हैं कि सोचने, समझने का अभाव है । हम सोचते ही इसलिए हैं, क्योंकि हम समझते नहीं । जब समझ आती है, तो सोचना विदा हो जाता है । सोचने में विचार अंदर ही अंदर घूघ्मते रहते हैं । तर्क होता है, फिर सही गलत का पता नहीं चलता ।

सोचने में प्रश्न पैदा होते हैं, पर उत्तर नहीं मिलते । समझ के साथ कोई प्रश्न नहीं, बल्कि उत्तर है क्योंकि समझ हृदय में पैदा होती है, जैसे अंधेरे में एक दीया जल गया, अचानक रोशजी हो गई और चीजें साफ हो गई । समझ ध्यान से पैदा होती है । ध्यान की ऊर्जा आपको अपने भीतर गहरे ले जाती है और आप उस जगह पहुंचते हैं, जहां समझ का सरोवर होता है, एक शीतल स्रोत तथा वहां से जो बुलबुला उठता है, वह है समझ ।

समझ को जगाने के लिए रोज कुछ समय अपने साथ शांत होकर बैठना होगा । अकेले में चुपचाप, बिना किसी तनाव के । फिर आखें बंद करके अपने भीतर डुबकी लगाने की कोशिश करें । जैसे-जैसे मौन घना होगा, आप पाएंगे कि कोई रोशनी सी उठ रही है । यह जो मौन केंद्र है, यही है समझ का स्थान ।





मैने देखा है

श्रीमती केशु रानी
माताजी - श्री विशाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैने एक काँटे भरी यात्रा को करीब से देखा है,
एक नारी के जीवन सफर को देखा है ।

असीम संभावनाएं जो अंकुरित हो सकती थी,
मैने उन किलकारियो को खामोश होते देखा है ।

नई फिराक को चाँव से दिखाने गई थी,
मैंने उस फिराक के टाकों को उधड़ते देखा है ।

वो लड़की है साहब क्या ही कर लेगी,
मैंने हवा में ऐसे हजार तानो को देखा है ।

समाज के रीति रिवाजों से लड़ते देखा है,
समाज छोड़िये अपने परिवार से झुझते देखा है ।

सीमित सोच का क्या खुब सितम देखा है,
उसके हिस्से की शिक्षा को भाई को लेते देखा है ।

दुख भरी आँखों से बेटी को ब्याहते देखा है,
मैंने दहेज की आग में उसे जलते देखा है ।

पंखो को कटटे हुए देखा है,
मैंने घुंघठ में सपनों को घुटते हुए देखा है ।

मैंने सदियों के उस कहर को देखा है,
मैंन सती को जलते हुए देखा है ।

मैं समय हूँ समय को बदलते देखा है,
छोरी को छोरों से कम है ऐसे उस दौर को देखा है ।

मान्यताओं में प्रहार करते हुए देखा है,
दंगल में तीरंगे को फहराते हुए देखा है ।

तानों से उपर उठते हुए देश है,
उसे अचूक निशाना लगाते हुए देखा है ।

अदम्य साहस से बढ़ते हुए देखा है,
मैंने उसे एवरेस्ट पे चढ़ते हुए देखा है ।

कल्पना की उड़ान को हकीकत होते देखा है,
मैंने उसे अंतरीक्ष में जाते हुए देखा है ।

हवा में खुशबू को घुलते हुए देखा है,
मैंने सुब्बा लक्ष्मी और लता को गाते हुए देखा है ।

चार दिवारी से निकालते हुए देखा है,
मैंने उसे देश चलाते हुए देखा है ।

उच्चाइयों के शिखर को छुते हुए देखा है,
मैंने आज की महिलाओं को देखा है ।

मैंने ईश्वर को तो नहीं देखा,
एक औरत के रूप में मैंने माँ को देखा है ।

भारत में दहेज प्रथा



मुहम्मद अरिफुल हक
भाई - मुहम्मद जियाऊल हक
हिंदी अधिकारी

दहेज प्रथा भारत में बहुत बड़ी सामाजिक बुराइयों में से एक है । आए दिन दहेज के कारण मृत्यु के समाचार सुनने को मिलते हैं । इस दहेज के राक्षस द्वारा माता-पिताओं की बहुत सी बेटियाँ उनसे छीन ली गई हैं । हमारे समाज में प्रचलित भ्रष्टाचार के कारणों में से अधिकतर दहेज प्रथा का कारण है । लोग गैर कानूनी रूप से धन संचय करते हैं, क्योंकि उन्हें अपनी पुत्रियों की शादी में दहेज पर भारी खर्च वहन करना पड़ता है । यह बुराई समाज को खोखला कर रही है और वास्तविक प्रगति अवरूद्ध हो गई है ।

दहेज प्रथा वर्तमान भारतीय समाज की ही प्रथा नहीं है । यह हमें हमारे भूतकाल से विरासत में मिली है । हमारी पुराण कथाओं में माता-पिता द्वारा अपनी पुत्रियों को अच्छा दहेज दिए जाने का उल्लेख है । यह प्रथा किसी-न-किसी रूप में विदेशों से भी प्रचलित थी । सेल्यूकस निकेटर ने चन्द्रगुप्त मौर्य को अपनी पुत्री के विवाह में काफी आभूषण, हाथी और अन्य सामान दिया था । दूसरे देशों में भी यह प्रथा है कि माता-पिता नव-विवाहित जोड़े को उपहार देते है । मातृ प्रधान प्राचीन समाजों के अतिरिक्त लगभग सभी समाजों में यह प्रथा प्रचलित है ।

वास्तव में देखा जाए तो प्रथा में कोई खराबी नहीं है । यदि इसको उचित सीमाओं के अन्तर्गत रखा जाए तो यह स्वस्थ रिवाज है । नकदी या उपहार के रूप में नव-विवाहित दम्पत्ति को जो कुछ दिया जाता है उससे वे आसानी से अपना जीवन प्रारम्भ कर सकते है, किन्तु समस्त बोझ लड़की के माता-पिता ही क्यों उठाएँ ? यह प्रथा बुराई इसलिए बन गई है कि यह सीमा पार कर गई है, जबकि पहले दहेज प्रेम और स्नेह का प्रतीक था। अब तो यह व्यापार या सौदेबाजी हो गई है । सभी भावनात्मक पहलूओं को समाप्त कर इसने निन्दनीय भौतिकवादी रूप ग्रहण कर लिया है । घृणास्पद बुराई के द्वारा पवित्र सामाजिक बन्धनों को ही खतरा पैदा हो गया है ।

भारतीय समाज में इस प्रथा के प्रचलन का पहला कारण महिलाओं की पुरूषों पर आर्थिक निर्भरता है । अधिकतर पत्नी अपनी जीविका के लिए अपने पति पर पूर्णरूपेण निर्भर रहती है और पति इसकी कीमत अपनी पत्नी के माता-पिताओं से माँगता है । दूसरे, महिलाओं को समाज में निम्न स्तर प्रदान किया जाता है । उनको वस्तु समझा जाता है । दूसरी ओर लड़के को ऊँचा दर्जा प्रदान किया जाता है । विडम्बना यह है कि परिवार में दोनों की हिस्सेदारी एक दूसरे की पूरक होते हुए भी विवाह के बाजार में लड़के को अधिक महत्व प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज में कौमार्य पवित्रता पर बहुत बल दिया जाता है । भारतीय माता-पिता को अपनी पुत्री का विवाह एक विशेष समय पर किसी उपयुक्त लड़के के साथ करना होता है । चाहे कितना ही मूल्य देना या त्याग करना पड़े, उन्हें भय रहता है कि विवाह बिना एक विशेष आयु से ऊपर जाने में कौमार्य नष्ट किया जा सकता है । लड़को के माता-पिता की इस मजबूरी का अनुचित लाभ उठाते हैं । इसके अतिरिक्त नारी शिक्षा की भी अभी कमी है । अशिक्षित और अज्ञानग्रस्त नारियाँ खरीदना एवं बेचा जाना और निम्न प्राणियों के रूप में समझा जाना सहन करती है । हमारे पुरूषों में भी औचित्य एवं न्याय की भावना का विकास नहीं हुआ है । इस घृणास्पद बुराई के प्रति उनके हृदय पत्थर बन गए हैं । गलत तरीकों से एकत्र किया गया धन भी दहेज के अनेक कारणों में से एक है । यह एक काला धन है, जिसका व्यय करने का कोई रास्ता नहीं, सिवाय फालतू और दिखावटी उपभोग



के दहेज वास्तव में धनी लोगों का दिखावटी उपभोग का खर्चा है । औसत आदमी में समाज के इस स्तर के लोगों की नकल करने की प्रवृत्ति होती है, क्योंकि उसके साधन सीमित है, इसलिए वह दहेज के बोझ से दब जाता है । दहेज का एक अन्य कारण भारतीय समाज में कठोर जाति प्रथा होना है । माता पिता को अपनी पुत्री का विवाह अपनी जाति में करना होता है, जिससे लड़के को चुनने का विकल्प प्रतिबंधित हो जाता है । इस रिवाज की बेड़ियों को तोड़ने का साहस साधारण लोगों में नहीं है और न ही समाज सामान्यतया इसकी स्वीकृति ही देता है । इसके अतिरिक्त अपनी हैसियत से ऊँचे परिवार में वैवाहिक संबंध स्थापित करने की प्रवृत्ति भी दहेज का एक बड़ा कारण है । माता-पिता अपनी पुत्री का सुख खरीदने के लिए अधिक से अधिक देना चाहेंगे । इस प्रकार विवाह के बाजार में सौदे तय होते हैं जैसे कि वस्तुओं के सौदे तय होते है । जो सबसे ऊँची बोली लगाता है वह ही वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर पाता है ।

यदि भारतीय समाज को प्रगति करनी है और तेजी से आगे बढ़ रहे विश्व के अन्य समाजों के साथ कदम-से-कदम मिलाकर चलना है तो दहेज प्रथा का अन्त होना चाहिए । महिलाओं और पुरूषों दोनों के लिए सही प्रकार की शिक्षा प्रदान किए जाने की आवश्यकता है । विज्ञापन एवं प्रचार के द्वारा इस बुराई के खिलाफ सामाजिक अन्तःकरण को जाग्रत किया जाना चाहिए । अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन देना चाहिए। दहेज विरोधी अधिनियम को और अधिक सख्त बनाया जाना चाहिए तथा उसको भली प्रकार लागू भी किया जाना चाहिए। दोषियों को ऐसा दण्ड देना चाहिए जिससे कि भविष्य में वे ऐसा अपराध न कर सकें । लिंगों की समानता के तथ्यों से लोगों को जोरदार तरीकों से अवगत कराया जाना चाहिए ।

आधुनिक समय में शिक्षित महिलाओं ने बिना किसी संदेह के यह प्रदर्शित कर दिया है कि वे पुरूष के साथ किसी भी कार्य में सफलता एवं विशिष्टता के साथ पुरूषों के साथ मुकाबला कर सकती है । उनमें से बहुत तो अपने परिवारों के लिए रोजी-रोटी भी कमा रही हैं । यहाँ तक कि वे बूढ़े माँ-बाप का बोझ भी उठा रही है । बुढ़ापे में केवल लड़का ही माँ-बाप का सहारा बनेगा यह भ्रान्ति अब समाप्त हो चुकी है । नारी ने पुरूष के हाथों शताब्दियों से कष्ट उठाए हैं, किन्तु अब न्याय के चक्र को फिरना चाहिए तथा उन्हें समाज में उनका उचित स्थान व सम्मान मिलना ही चाहिए । इसके अतिरिक्त इस प्रकार के रीति रिवाजों से ग्रस्त समाज विकास की दौड़ में अन्य समाजों के साथ नहीं ठहर सकता, इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे हर सम्भव प्रयास किए जाएं कि दहेज प्रथा भूतकाल की बीज बनकर रह जाए ।



भारतीय समाज से इस बुराई का अन्त करने के लिए समाज कल्याण संगठनों को आगे आना चाहिए । महिलाओं को भी यह संकल्प लेना चाहिए कि वे दहेज माँगने वाले व्यक्ति से विवाह नहीं करेंगी । इस बुराई को समाप्त करने हेतु किसी भी अन्य उपाय से उनकी भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है । हमारी बेटियाँ आगे आएं और संकल्प लें कि वे दहेजखोर लोगों को अस्वीकार कर देंगी, भले ही बिना विवाह के कुँवारी रह जाएं। यह जोखिम उठाकर भी उन्हें दहेजखोरों को सबक सिखाना होगा। यदि हमें आगे बढ़ना और प्रगति करना हैं तो जितना शीघ्र यह कार्य हो जाए, उतना ही हमारे लिए अच्छा है ।

पिता पर खूबसूरत कविता



सुश्री स्निग्धा मिश्रा,
पुत्री - श्री विनोद कुमार,
सहायक निदेशक(हि.शि.यो., शिलांग)

पिता एक उम्मीद है, एक आस है,
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
बाहर से सख्त अंदर से नर्म हैं,
उनके दिल में दफन कई मर्म हैं ।

पिता संघर्ष की आंधियों में हौसलों की दीवार हैं,
परेशानियों से लड़घ्ने को वो धारी तलवार हैं,
बचपन में खुश करने वाला खिलौना हैं,
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला बिछौने हैं ।

पिता जिम्मेदारियों से लदी गाड़ी का सारथी हैं,
सबको बराबर का हक दिलाता यही एक महारथी हैं,
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान हैं,
इसी से तो माँ और बच्चों की पहचान हैं ।

पिता जमीर हैं, पिता जागीर हैं,
जिसके पास ये हैं वह सबसे अमीर है ।



हिंदी दिवस 2024 : राष्ट्रीय गौरव और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक

श्री जितिन कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

हर साल 14 सितंबर को पूरे भारत में हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है । यह दिन हिंदी भाषा की समृद्धि, महत्ता और उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को समझने का अवसर प्रदान करता है । 2024 का हिंदी दिवस भी इस गौरवशाली परंपरा का हिस्सा है, जहां भारतवासी अपनी मातृभाषा हिंदी का सम्मान और प्रसार करते हैं ।

हिंदी दिवस का इतिहास : – हिंदी दिवस की शुरुआत 14 सितंबर 1949 को हुई थी जब संविधान सभा ने हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया । इसके पीछे एक महत्वपूर्ण उद्देश्य था – भारत जैसे विविधता से भरे देश में एक ऐसी भाषा को राष्ट्रीय पहचान देना, जो अधिकांश जनता द्वारा समझी और बोली जाती हो । महात्मा गांधी और कई अन्य स्वतंत्रता सेनानियों का भी यह सपना था कि हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया जाए। इस दिन को प्रतिवर्ष मनाने का निर्णय हिंदी के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने और उसके महत्व को जन-जन तक पहुँचाने के लिए किया गया।

हिंदी का महत्व : – आज हिंदी न केवल भारत की आधिकारिक भाषा है, बल्कि यह देश की सांस्कृतिक और सामाजिक पहचान का भी प्रतीक है । यह 50 करोड़ से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है, और इसके साहित्य, सिनेमा, और संगीत ने विश्वभर में पहचान बनाई है । हिंदी का साहित्यिक खजाना बहुत बड़ा है, जिसमें कवि तुलसीदास, कबीर, प्रेमचंद, और महादेवी वर्मा जैसे महान साहित्यकारों की रचनाएँ शामिल हैं। हिंदी भाषा ने जनमानस को जोड़ने का काम किया है और उसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाया है ।



हिंदी दिवस के आयोजन : – हिंदी दिवस के अवसर पर भारत भर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन होता है । सरकारी और गैर-सरकारी संस्थानों में भाषण, कवि सम्मेलन, निबंध प्रतियोगिताएँ, और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं । इसके अतिरिक्त, स्कूल और कहलेजों में हिंदी भाषा के विकास और उसके महत्व पर प्रकाश डाला जाता है । सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को



प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार और सम्मान भी प्रदान किए जाते हैं । इस साल केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने 14 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में राजभाषा की हीरक जयंती पर एक स्मारक डाक टिकट जारी किया और राजभाषा की हीरक जयंती पर स्मारक डाक टिकट का विमोचन किया गया और राजभाषा की हीरक जयंती पर स्मारक डाक टिकट भी जारी किया । माननीय गृहमंत्री और सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह के कर कमलों से, सचिव, प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत, महोदय, श्री वी. श्रीनिवास जी को राजभाषा कीर्ति पुरुस्कार प्रदान किया गया। यह पुरस्कार राजभाषा हिंदी में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए, प्रशासनिक सुधार और लोक शिकायत विभाग को, 300 से कम कार्मिक वाले मंत्रालयों / विभागों की श्रेणी में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा वर्ष 2023-24 के लिए दिया गया है ।

हिंदी का भविष्य : – आज के वैश्विक और डिजिटल युग में, हिंदी भाषा तेजी से उभर रही है । इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी बोलने और लिखने वालों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है । हिंदी में ब्लॉगिंग, यूट्यूब चौनल, पॉडकास्टिंग, और अन्य माध्यमों के द्वारा लोग अपने विचारों को साझा कर रहे हैं । यह एक सकारात्मक संकेत है कि हिंदी न केवल भारत में, बल्कि विश्वभर में अपनी पहचान को मजबूत कर रही है ।

निष्कर्ष : – हिंदी दिवस हमें अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व और सम्मान महसूस करने का अवसर देता है । यह दिन हमें याद दिलाता है कि हमारी भाषा हमारी सांस्कृतिक धरोहर है, जिसे संरक्षित और संवर्धित करना हमारा कर्तव्य है । 2024 का हिंदी दिवस हमें यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि हम हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए निरंतर प्रयासरत रहेंगे और इसे एक वैश्विक मंच पर ले जाने का कार्य करेंगे ।





पूर्वोत्तर की धरती

श्रीमती संगीता मिन्की
पत्नी - श्री रितेश आनंद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



पूर्वोत्तर की धरती, प्रकृति की छांव,
हरियाली में बसी, वहाँ की अद्भुत ठांव ।
सात बहनों की ये भूमि, अनूठी और अपार,
हर कोने में छिपा है, सुंदरता का संसार ।

अरुणाचल की घाटियाँ, जैसे चित्रकार का चित्र,
नदियाँ और झरने यहाँ, सजाते हैं दृश्य नया ।
हरे-भरे वन में, गूंजती पक्षियों की धुन,
चरणों में बिछा है, प्रकृति का सुंदर जुनून ।

मेघालय की वादियों में, छिपा है जन्नत का एहसास,
मौसम बदलता हर पल, लगता जैसे कोई परिहास ।
झरनों की कलकल, और बादलों का खेल,
हर दिशा में बसा है, सजीव परियों का मेल ।

त्रिपुरा की भूमि पर, हरे-भरे पेड़ों का जाल,
नदियाँ गुनगुनाती, करती सबका हाल ।
झीलों के किनारे, फूलों की रंगत,
साँसों में बसता है, यहाँ का मधुर अंचल ।

नागालैंड की पहाड़ियाँ, लिपटी हैं धुंध में,
जहाँ बादलों का मेला, हर दिन के संग में ।
वनस्पति की खुशबू, हर जगह में है छाई,
यहाँ की मिट्टी में बसी, है प्राकृतिक सफाई ।

मणिपुर की झीलों में, जलता है चाँद का अक्स,
शांत झरने की धारा, करती मन को तरंगित।
फूलों की महक से, बसता है यहाँ का जहां,
हर कदम पर बसा है, प्रकृति का नया गान ।

मिजोरम की वादियाँ, हरी-भरी और खिली,
सूरज की किरणों से, स्वर्णिम हो गईं वादियाँ सभी ।

नदियाँ, झरने, पहाड़ों की छांव,
यहाँ की सुंदरता में, है आत्मा का ठांव ।

असम की धरती, चाय के बागानों का देश,
हर कोने में बसा है, यहाँ का प्राकृतिक परिवेश ।
ब्रह्मपुत्र की धारा, अद्भुत और विशाल,
प्रकृति की अद्भुत छटा, हर ओर है मालामाल ।

सिक्किम के पहाड़, बर्फ की चादर ओढ़े,
नीला आकाश, और झरने, अद्भुत रूप लिए खड़े ।
हरे-भरे वन, और फूलों की महक,
यहाँ की प्रकृति, जैसे कोई सुंदर गीत ।

पूर्वोत्तर की धरती, प्रकृति का अनमोल रत्न,
हर कोने में छिपा है, एक नया स्वप्न ।
पेड़, पौधे, नदियाँ, और पर्वत,
यहाँ की सुंदरता, है सबका अद्वितीय स्वरूप ।

सात बहनों की भूमि, अनमोल और अनोखी,
प्रकृति का हर रूप, यहाँ बसा है भव्य और मौलिक ।
हरियाली में बसी, ये धरती की छांव,
पूर्वोत्तर की सुंदरता, है जैसे स्वर्ग की ठांव ।

आओ, चलो हम भी करें, इस प्रकृति की सैर,
हर कदम पर मिलेगा, यहाँ का अद्भुत ढेर ।
प्रकृति का ये सौंदर्य, है जीवन की आस,
पूर्वोत्तर की धरती, करती हर मन को रास ।



हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह 2023 : एक संक्षिप्त विवरण
हिन्दी कक्ष (लेखापरीक्षा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 29 सितम्बर, 2023 को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में हिन्दी पखवाड़ा का समापन समारोह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । हिन्दी पखवाड़ा का उद्घाटन माननीय मुख्य अतिथि श्रीमती जीन एस. डखार, विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, लेडीकिन कहलेज, शिलांग एवं तीनों कार्यालयों के समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा दीप प्रज्ज्वलन से किया गया ।

इस अवसर पर डॉ. डी. अनीश, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलांग ने अपने स्वागत भाषण में सभा में उपस्थित मुख्य अतिथि एवं तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया । उन्होंने अपने वक्तव्य में राजभाषा से संबंधित विविध जानकारियाँ दीं तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने की अपील की । उन्होंने अवगत कराया कि हिंदी पखवाड़े के आयोजन का मुख्य उद्देश्य गैर-हिंदी भाषी कार्मिकों को हिंदी से संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से हिंदी भाषा में दक्ष बनाना है । इन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कार एवं प्रोत्साहन राशियाँ प्रदान की जाती हैं, जिनसे उन्हें हिंदी में काम करने की प्रेरणा मिलती है । इन प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग करने से कार्मिकों का हिंदी में काम करने के प्रति आत्मविश्वास भी उत्पन्न होता है ।

इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिकाओं क्रमशः "पूर्वाशा" का 32 वें अंक और "नवीण पूर्वांचल संदेश" का 18 वें अंक, का विमोचन मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा किया गया । इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की "पूर्वाशा" पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कारों में क्रमशः श्री अमित कुमार बर्मण, सुश्री मौसमी वैद्य और श्रीमती हिमाशुभ्रा चक्रवर्ती को नकद पुरस्कार सहित प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

इस अवसर पर विभिन्न हिन्दी प्रतियोगिताएं जैसे, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी निबंध लेखन एवं हस्तलेखन इत्यादि प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए उपहार एवं प्रमाण-पत्र समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा प्रदान किए गए। इसके अलावा उपरोक्त वर्णित विभिन्न प्रतियोगिताओं के शेष प्रतिभागियों को भी समूह अधिकारियों के करकमलों द्वारा सांत्वना पुरस्कार के रूप में उपहार प्रदान किए गए । इस अवसर पर प्रश्नोत्तरी और आशु भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया एवं विजेताओं को उपहार प्रदान किए गए । अन्त में इस वर्ष हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम का समापन कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), शिलांग के उप महालेखाकार (प्रशासन), श्री सागर विजय काळे के धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ किया गया।

इस कार्यालय से सेवा निवृत्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों का विवरण (सितम्बर 2023 से अगस्त 2024 तक)

नाम एवं पदनाम	सेवा निवृत्ति तिथि
1. श्री क्रोशेक डी. खिवतम, पर्यवेक्षक	(31-01-2024)
2. श्री सैजिक नोंग्खलाव, एम.टी.एस.	(31-01-2024)
3. श्री पदम लाल सुनार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	(31-03-2024)

"पूर्वाशा" परिवार उपरोक्त सेवानिवृत्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के स्वस्थ्य, सक्रिय एवं दीर्घायु जीवन की तहे दिल से मंगल कामना करता है ।

- सम्पादक मण्डल



श्रद्धांजलि

नाम एवं पदनाम	जन्म तिथि	मृत्यु की तिथि
1. स्वर्गीय डगलस पासी, एम.टी.एस.	19-12-1970	31-12-2023

उपरोक्त अधिकारी के असामयिक निधन पर "पूर्वाशा" परिवार उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

- सम्पादक मण्डल







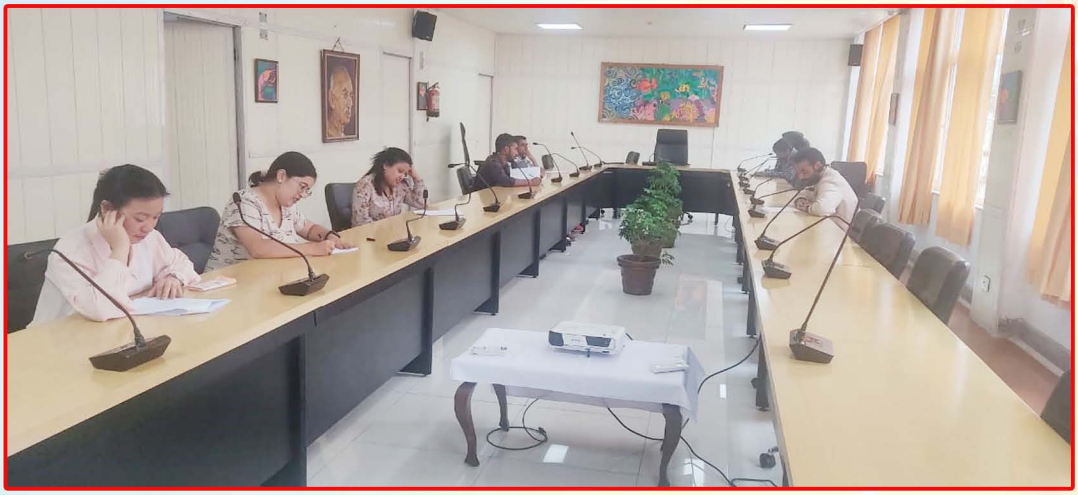
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 18-09-2023 को आयोजित हिंदी हस्तलेख या लिखावट प्रतियोगिता की एक झलक ।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 19-09-2023 को आयोजित हिंदी कविता लेखन प्रतियोगिता की एक झलक ।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 20-09-2023 को आयोजित हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता की एक झलक ।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 19-09-2023 को आयोजित हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद एवं विलोमतः प्रतियोगिता की एक झलक ।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 20-09-2023 को आयोजित हिंदीतर भाषी कार्मिक हेतु आशुभाषण प्रतियोगिता की एक झलक ।



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 20-09-2023 को आयोजित हिंदी भाषी कार्मिक हेतु आशुभाषण प्रतियोगिता की एक झलक ।